सदस्य बनें

सच और सरोकार की पत्रकारिता से जुड़ें
वार्षिक सदस्यता : ₹ 1000 मात्र
पूरा वर्ष अख़बार निःशुल्क
पैनल विज्ञापन दें
अपने व्यवसाय/संस्था का प्रचार करें 'जन जन विचार' में।
किफायती • प्रभावी • विश्वसनीय
संपर्क : 94354 09990/ 69001 26012

जन जन की बात जन जन तक

साप्ताहिक

जन जन विचार

D.S. Associates

Sri Om Plaza
2nd Floor, K.C. Road,
Chatribari, Guwahati-1
Phone : 7002682705

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367 :: Guwahati, Friday, 6 February 2026 :: Vol-4 Year-1 :: शुक्रवार । 6 फरवरी 2026 । शक संवत 1947 । फाल्गुन । कृष्ण । पंचमी । :: मूल्य : 10 रुपये

जन चिंतन
धनेश्वर चौधरी

करें सवाल!

लोकतंत्र की असली ताकत सत्ता की कुर्सी नहीं, बल्कि उस कुर्सी पर बैठने वालों से सवाल करने वाली जनता होती है। लेकिन आज हालत यह है कि हमने सवाल पूछना जैसे छोड़ ही दिया है।

गांव की सड़क महीनों से टूटी है- चुप।
सरकारी अस्पताल में डॉक्टर नहीं - चुप।
स्कूल में शिक्षक कम-चुप।
युवाओं की भर्ती अटकी - चुप।

और जब चुनाव आते हैं, तब अचानक सब याद आता है। हम हर बात पर सिर्फ सरकार को घेरते हैं, लेकिन विपक्ष से नहीं पूछते-

तुम क्या कर रहे हो?
तुम्हारी भूमिका कहां है?
क्या विपक्ष सिर्फ नारे लगाने के लिए है?
क्या संसद सिर्फ हंगामे के लिए है?

जब सत्ता गलती करे, तो सवाल जरूरी है। लेकिन जब विपक्ष सोता रहे, तब भी सवाल जरूरी है।

आज हम सच नहीं देखते,
हम पार्टी का झंडा देखते हैं।
जो हमारी पार्टी करे-सही।
जो दूसरी करे-गलत। **शेष पृष्ठ 2 पर**

भव्य उद्घाटन, चमकदार इमारतें और बड़े दावे अपनी जगह, लेकिन असली सवाल यह है कि क्या इन स्कूल भवनों की नियमित देखरेख भी उतनी ही गंभीरता से होगी? पहले भी कई सरकारी स्कूलों में करोड़ों की लागत से बने भवन उचित देखभाल के अभाव में खराब हो गए हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि आज जिन इमारतों पर तालियां बज रही हैं, वे कल उपेक्षा और लापरवाही की भेंट चढ़ जाएं? क्या सरकार इनके रख-रखाव के लिए स्थायी बजट, जवाबदेही और निगरानी व्यवस्था बनाएगी, या फिर यह जिम्मेदारी कागजों तक ही सीमित रह जाएगी?

शिक्षा की मजबूत नींव

क्रांति : 67 भव्य स्कूल भवनों का उद्घाटन, 61 की आधारशिला

असम के शिक्षा जगत में हो रहे क्रांतिकारी बदलाव की कहानी कहता गुवाहाटी में नवनिर्मित अत्याधुनिक सुविधाओं वाला भव्य विद्यालय भवन।

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

जब देश में शिक्षा पर बातें ज्यादा और जमीन पर काम कम दिखाई देता है, तब असम सरकार का यह कदम उम्मीद जगाता है। टूटे कमरों, सीमित संसाधनों और कठिन परिस्थितियों में पढ़ने वाले लाखों बच्चों के लिए यह फैसला सिर्फ इमारतों का नहीं, बल्कि भविष्य के निर्माण का संदेश है।

इसी सोच के साथ मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने सोनापुर में आयोजित एक कार्यक्रम में 67 नए आधुनिक स्कूल भवनों का लोकार्पण किया और 61 नए विद्यालयों की आधारशिला रखकर 'विकसित असम' की नींव को और मजबूत किया।

इस ऐतिहासिक पहल के तहत राज्य सरकार शिक्षा ढांचे को पूरी तरह बदलने की दिशा में आगे बढ़ रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि असम अब उस दौर से आगे निकल चुका है, जब एक स्कूल की मरम्मत भी बड़ी उपलब्धि मानी जाती थी। अब सरकार बड़े पैमाने पर शिक्षा व्यवस्था का आधुनिकीकरण कर रही है।

■ सरकार का लक्ष्य वर्ष 2030 तक 1300 स्कूलों का आधुनिकीकरण

सरकार का लक्ष्य वर्ष 2030 तक लगभग 1300 स्कूलों को आधुनिक सुविधाओं से लैस **शेष पृष्ठ 4 पर**

"मजबूत बुनियादी ढांचे के बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कल्पना संभव नहीं है। हमारी कोशिश है कि असम का हर बच्चा बड़े सपने देखे और उन्हें पूरा करे।"
-डॉ. हिमंत विश्व शर्मा, मुख्यमंत्री

आधारभूत ढाचा सर्वश्रेष्ठ, पर पढ़ाई कहां?

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

इसमें कोई दो राय नहीं कि मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा असम को देश के अग्रणी राज्यों की सूची में सबसे ऊपर ले जाने के लिए जो कुछ हो सकता है, वह सब कुछ कर रहे हैं। राज्य में उद्योग-धंधा लगाने की बात हो, राज्य को विश्व पर्यटन के नक्शे में पहचान दिलाने, कला-संस्कृति को समृद्ध करने, कानून-व्यवस्था को मजबूत करने से लेकर शिक्षा के आधुनिकीकरण के लिए मुख्यमंत्री के दमदार कदमों की सराहना उनके विरोधी भी करने को बाध्य हो गए हैं। स्कूली शिक्षा के आधुनिकीकरण के लिए जब मुख्यमंत्री ने सभी आधुनिक सुविधाओं से लैस 67 भव्य विद्यालय भवनों

अंदर पढ़ें

3. ☞असम विस चुनाव : भाजपा का लक्ष्य सौ सीटें
5. ☞जमीन के नीचे दौड़ेगी रेल
6. ☞संभली मणिपुर की नैया, खेमचंद बने खेवनहार
11. ☞विकसित भारत का बजट
12. ☞बिहार : गांव बनेंगे 'बिजनेस हब'
13. ☞अमेरिका से ट्रेड डील
15. ☞टी 20 : बादशाहत बरकरार रखेगी टीम इंडिया

हनुमान जयंती में जनसहभागिता पर जोर

जन जन विचार
...✍ अंकित मिश्र

आगामी हनुमान जयंती महोत्सव को शांतिपूर्ण, अनुशासित और सामाजिक संवेदनशीलता के साथ मनाने के उद्देश्य से श्री हनुमान जन्मोत्सव समिति, गल्लापट्टी हनुमान मंदिर की विशेष बैठक होटल विश्व रतन में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता नव मनोनीत अध्यक्ष जयप्रकाश गोयनका ने की।

सभा का संचालन सचिव नवल किशोर मोर ने किया, जबकि कोषाध्यक्ष किशन कुमार लोहिया मंचासीन रहे। अध्यक्ष ने कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में कैलाश चौधरी को मनोनीत किया।

बैठक में निर्णय लिया गया कि इस वर्ष आयोजन में स्थानीय कलाकारों को प्राथमिकता दी जाएगी और भजन संध्या को रात 10 बजे तक समाप्त किया जाएगा, ताकि छात्रों, रोगियों और आसपास के लोगों को कोई असुविधा न हो। मुख्य मंदिर के साथ श्री रामदेव मंदिर और श्री पंचायती ठाकुरबाड़ी को फूलों से सजाने का भी निर्णय लिया गया।

शोभायात्रा प्रशासनिक अनुमति के अनुसार निकाली जाएगी। अनुमति न मिलने की स्थिति में प्रतीकात्मक आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा पुरुष और महिला स्वयंसेवकों की नियुक्ति कर व्यवस्थाओं को मजबूत बनाने पर भी सहमति बनी।

बैठक में पंचांग के शीघ्र प्रकाशन, अनुदान के साथ वितरण तथा 28 मार्च को गौशाला हनुमान मंदिर में कड़ाही प्रसाद आयोजन का प्रस्ताव भी पारित किया गया।

नई टीम ने संभाली जिम्मेवारी

अध्यक्ष : जयप्रकाश गोयनका **कार्यकारी अध्यक्ष :** कैलाश चौधरी
सचिव : नवल किशोर मोर **कोषाध्यक्ष :** किशन कुमार लोहिया
नौ उपाध्यक्ष : निर्मल तिवाड़ी, रतन चौधरी, पीतराम केडिया, किशन जालान, नारायण खाकोलिया, गौतम शर्मा, विशाल भातरा, संजय मोर और अजय पोद्दार
ग्यारह संयुक्त मंत्री : सुनील बाजोरिया, चंद्रप्रकाश जालान, अरुण अग्रवाल, जयप्रकाश लोहिया, हेमंत सुरेका, विधान हरलालका, विनय कसेरा, आकाश चौरड़िया, शिव भीमसरिया, दिनेश सिकरिया और माखन अग्रवाल
प्रचार मंत्री : विकास गुप्ता

स्वावलंबन की मिसाल बनी दिगंबर जैन महिला समिति की प्रदर्शनी

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने और उन्हें आत्मनिर्भरता की राह पर आगे बढ़ाने की दिशा में दिगंबर जैन महिला समिति द्वारा आयोजित 'स्वावलंबन' प्रदर्शनी एक प्रेरणादायी पहल बनकर सामने आई। फैंसी बाजार स्थित महावीर स्थल में आयोजित इस एकदिवसीय प्रदर्शनी ने महिलाओं की प्रतिभा और उद्यमशीलता को समाज के सामने प्रस्तुत किया।

श्री दिगंबर जैन पंचायत गुवाहाटी की महिला इकाई द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य केवल उत्पादों की बिक्री नहीं, बल्कि महिलाओं में आत्मविश्वास और व्यावसायिक सोच विकसित करना था। यहां महिलाओं द्वारा तैयार हस्तनिर्मित वस्तुएं, परिधान, सजावटी सामान और घरेलू उत्पाद विशेष आकर्षण का केंद्र रहे।

प्रदर्शनी का उद्घाटन आकांक्षा जैन द्वारा किया गया। उन्होंने महिलाओं की इस पहल को सराहनीय बताते हुए कहा कि ऐसे आयोजन समाज में आर्थिक सशक्तिकरण की मजबूत नींव रखते हैं। कार्यक्रम में समिति की अध्यक्ष रत्न प्रभा सेठी सहित कई पदाधिकारी एवं समाज के गणमान्य लोग उपस्थित रहे। आयोजन के दौरान बच्चों के लिए प्रतियोगिताएं तथा सामाजिक योगदान देने वाले परिवारों का सम्मान भी किया गया।

फैंसी बाजार में जीएसटी अभियान

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

राज्य के प्रमुख व्यापारिक केंद्र फैंसी बाजार में जीएसटी विभाग द्वारा चलाए गए विशेष अभियान ने व्यापार जगत में हलचल मचा दी है। लंबे समय से कर चोरी और अनियमित लेन-देन की शिकायतों के बाद अधिकारियों ने सख्त कार्रवाई करते हुए कई प्रतिष्ठानों की जांच की।

जानकारी के अनुसार, जीएसटी अधिकारियों की एक विशेष टीम ने बाजार की विभिन्न दुकानों और गोदामों का निरीक्षण किया। इस दौरान बिल, रजिस्टर और स्टॉक की गहन जांच की गई। कुछ प्रतिष्ठानों में दस्तावेजों की कमी पाए जाने पर उन्हें नोटिस भी जारी किए गए।

अधिकारियों का कहना है कि यह अभियान व्यापार में पारदर्शिता लाने और ईमानदार व्यापारियों को संरक्षण देने के उद्देश्य से चलाया गया है। सरकार चाहती है कि सभी व्यापारी नियमों का पालन करें और देश के विकास में अपना योगदान दें।

साप्ताहिक राशिफल

6 से 12 फरवरी 2026।। विक्रम संवत 2082-मास : फाल्गुन, पक्ष : कृष्ण- पंचमी।।

मेष यह सप्ताह उत्साहवर्धक बना रहेगा। कार्यों में उन्नति होगी। नौकरी एवं व्यापार में सफलता के साथ ही नए कार्य शुरू होंगे। सोच-समझकर निवेश करें। स्वास्थ्य लाभ मिलेगा। योग एवं स्वास्थ्यवर्धक कार्य करते रहें। लाभ का योग बना रहेगा। विवादों से बचें।

वृषभ यह सप्ताह व्यस्तता एवं तनावपूर्ण हो सकता है। संयम एवं विवेक से कार्य करें। व्यवसाय में सफलता एवं सुखद समाचार मिलेंगे। परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। सुख-शांति बनी रहेगी। व्यवसाय एवं नौकरी में उन्नति होगी। मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

मिथुन

कर्क नौकरी एवं बिजनेस के लिए यह सप्ताह बहुत ही अच्छा रहने वाला है। पहले से सोचे हुए कार्य पूरे होंगे। धन लाभ का योग है। कार्य के प्रति सजगता रखें। व्यापार में वृद्धि का योग है। सभी क्षेत्रों में सकारात्मक प्रयास करें, लाभ मिलेगा।

सिंह

कन्या आर्थिक लाभ के साथ-साथ मान-सम्मान में वृद्धि होगी। पारिवारिक सामंजस्य एवं स्वास्थ्य सुख की प्राप्ति होगी।

तुला यह सप्ताह थोड़ा मानसिक तनाव देने वाला हो सकता है। कार्य के प्रति सावधानी बरतें। लोग-रिश्तों में संतुलन बनाए रखें।

वृश्चिक यह सप्ताह उत्साहवर्धक बना रहेगा। सभी क्षेत्रों में उन्नति होगी। सामाजिक कार्यों में सक्रियता बढ़ेगी एवं स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

धनु

मकर शिक्षा एवं नौकरी क्षेत्र से जुड़े हुए लोगों के लिए यह सप्ताह व्यावसायिक क्षेत्र में परिवर्तन लेकर आएगा। मित्रों से लाभ एवं सुख-शांति का अनुभव रहेगा।

कुंभ यह सप्ताह आपके लिए उत्तम है। घर-परिवार में सुख-शांति का माहौल बना रहेगा। सभी क्षेत्रों में लाभ होगा। कार्यक्षेत्र को उत्कृष्ट श्रेणी में आगे बढ़ाने का प्रयास करें।

मीन आर्थिक रूप से यह सप्ताह लाभदायक रहेगा। कार्य में उन्नति एवं कार्य की गति तेज होगी। पारिवारिक विवादों से बचे एवं खुशी का आनंद लें।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

रविवार - 8 फरवरी : भानु सप्तमी
सोमवार - 9 फरवरी : कालाष्टमी, जानकी जयंती
बुधवार - 11 फरवरी : रामदास जयंती
गुरुवार - 12 फरवरी : स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती

भाग्योदय
●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

पृष्ठ 1 का शेषांश...

करें सवाल!

यही सोच लोकतंत्र को अंदर से खोखला कर रही है।
सच्चा राष्ट्रवादी वह नहीं, जो हर फैसले पर ताली बजाए, सच्चा राष्ट्रवादी वह है, जो गलत पर डटकर बोले, 'नहीं।'
देशभक्ति का मतलब चुप रहना नहीं, देशभक्ति का मतलब जिम्मेदार बनना है।
अगर जनता सोती रही,
मीडिया बिकता रहा,
विपक्ष भटकता रहा,
और सत्ता मनमानी करती रही-
तो नुकसान किसी पार्टी का नहीं,
देश का होगा।
आज जरूरत है-
अंधभक्ति छोड़ने की,
अंधविरोध छोड़ने की,
और विवेक अपनाने की।
हमें सत्ता से भी पूछना है,
विपक्ष से भी पूछना है,
और खुद से भी पूछना है-
'क्या मैं सिर्फ दर्शक हूं,
या इस लोकतंत्र का जिम्मेदार नागरिक?'
क्योंकि याद रखिए-
जिस दिन जनता ने सही सवाल पूछना शुरू कर दिया, उस दिन देश को सही दिशा मिल जाएगी। यही सच्ची राष्ट्रसेवा है।

असम विस चुनाव : भाजपा का लक्ष्य सौ सीटें

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम विधानसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी ने सत्ता में वापसी के लिए पूरी ताकत झोंक दी है। पार्टी ने राज्य में 100 सीटें जीतने का लक्ष्य तय कर आक्रामक चुनावी अभियान की शुरुआत कर दी है।

इसी कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 14 फरवरी को गुवाहाटी पहुंचकर बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं के विशाल सम्मेलन को संबोधित करेंगे। इस कार्यक्रम में करीब एक लाख कार्यकर्ताओं के शामिल होने की संभावना है। इसे भाजपा की जमीनी पकड़ मजबूत करने की बड़ी रणनीति माना जा रहा है।

वहीं, 21 फरवरी को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह असम दौरे पर आएंगे। वे संगठनात्मक बैठकों की अध्यक्षता करेंगे और चुनावी तैयारियों की समीक्षा कर रणनीति को अंतिम रूप देंगे।

पार्टी नेतृत्व का मानना है कि मोदी-शाह की लगातार यात्राएं

फिर आ रहे मोदी-शाह

कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा भरेंगी और चुनावी दिशा तय करेंगी। भाजपा इस बार अपने प्रचार में विकास, सुशासन और संगठन की मजबूती को मुख्य मुद्दा बना रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा भी सरकार की उपलब्धियों को जनता के सामने रख रहे हैं। हाल ही में उन्होंने 67 नए स्कूल भवनों का उद्घाटन किया और 61 नए स्कूलों की आधारशिला रखी। इन परियोजनाओं पर लगभग 760 करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं।

राजनीतिक जानकारों के अनुसार, भाजपा का यह अभियान स्पष्ट संकेत देता है कि पार्टी असम को लेकर कोई जोखिम नहीं लेना चाहती। संगठन से लेकर सरकार तक, हर स्तर पर तैयारी तेज कर दी गई है।

अब देखना यह है कि भाजपा का '100 सीटों का मिशन' हकीकत बनता है या जनता कोई नया राजनीतिक संदेश देती है।

बोडोलैंड की सभी सीटों पर लड़ेगी यूपीपीएल

जन जन विचार
...✍ कोकराझाड़

आगामी असम विधानसभा चुनाव को लेकर बोडोलैंड क्षेत्र में राजनीतिक हलचल तेज हो गई है। यूनाइटेड पीपुल्स पार्टी लिबरल के अध्यक्ष प्रमोद बोड़ो ने बड़ा एलान करते हुए कहा है कि उनकी पार्टी बोडोलैंड टेरिटोरियल रीजन की सभी सीटों पर चुनाव लड़ेगी, साथ ही कुछ सीटों पर क्षेत्र के बाहर भी उम्मीदवार उतारेगी।

मीडिया से बातचीत में उन्होंने बताया कि जनता की भावना को देखते हुए यह फैसला लिया गया है। उन्होंने कहा, 'लोग चाहते हैं कि यूपीपीएल विधानसभा चुनाव में मजबूती से उतरे। इसी भावना को ध्यान में रखते हुए हमने सभी सीटों पर लड़ने का निर्णय लिया है।'

हालांकि, प्रमोद बोड़ो ने यह भी स्पष्ट किया कि पार्टी ने गठबंधन के विकल्प को पूरी तरह बंद नहीं किया है। उन्होंने कहा कि यूपीपीएल विभिन्न दलों से बातचीत कर रही है, जिनमें सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी भी शामिल है। उन्होंने कहा, 'हम लचीला रुख रखते हैं। बातचीत जारी है। जरूरत पड़ी तो हम अकेले भी चुनाव लड़ने के लिए तैयार हैं।'

फिलहाल यूपीपीएल का गठबंधन भाजपा के साथ बना हुआ है और यह व्यवस्था आदर्श आचार संहिता लागू होने तक जारी रहने की संभावना है।

मुख्यमंत्री के नेतृत्व में बह रही विकास की धारा

जन जन विचार
...✍ रोहा

शालमरा उच्च विद्यालय के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन कर बोले विधायक शशिकांत दास

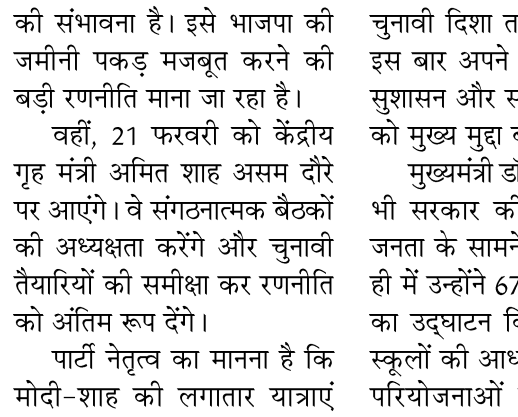

रोहा विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत शालमरा उच्च माध्यमिक विद्यालय के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन विधायक शशिकांत दास ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राज्य में मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा के नेतृत्व में विकास की धारा निरंतर बह रही है।

यह भवन ग्रामीण उन्नतिकरण योजना आरआईडीएफ-29 के तहत वर्ष 2023-24 में लगभग 7.5 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित किया गया है। उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में स्कूल भवनों के लोकार्पण का सीधा प्रसारण भी दिखाया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक शशिकांत दास ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा के नेतृत्व में शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, पुल और तटबंध निर्माण जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। उन्होंने कहा कि सरकार का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराना है।

पत्रकारों द्वारा भाजपा में शामिल होने से जुड़े सवाल पर विधायक ने कहा कि जल्द ही इस विषय पर स्पष्ट जानकारी मिलेगी और वे एक महत्वपूर्ण निर्णय की ओर बढ़ रहे हैं।

अखंड महायज्ञ की तैयारियों में जुटी श्री जय बजरंग सेवा समिति

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

श्री जय बजरंग सेवा समिति बेलतला, गुवाहाटी की ओर से धार्मिक एवं सामाजिक उत्थान के उद्देश्य से वर्ष 2026 में भव्य श्री 108 अखंड महामृत्युंजय यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन समाज में शांति, समृद्धि एवं सद्भाव का संदेश देगा।

कार्यक्रम के अंतर्गत 8 फरवरी को सुबह 8.35 बजे दारासोआ आश्रम से भव्य कलश यात्रा निकाली जाएगी। उसी दिन दोपहर 1.05 बजे यज्ञ का शुभारंभ होगा, जो 9 फरवरी 2026 को दोपहर 2.35 बजे तक संपन्न होगा। इसके बाद संध्या 5.35 बजे दीप यज्ञ का आयोजन किया जाएगा।

9 फरवरी की संध्या 7.05 बजे से 9.00 तथा श्रीराम कथा तथा इसके बाद रंगारंग धार्मिक कार्यक्रम टी-सिरीज के कलाकारों द्वारा किया जाएगा।

समिति की ओर से श्रद्धालुओं से इस पुण्य कार्य में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने की अपील की गई है।

कार्यक्रम के अंतर्गत भजन-कीर्तन, हवन-पूजन एवं विशेष पूजा-अर्चना का भी आयोजन किया जाएगा। समिति का उद्देश्य धार्मिक गतिविधियों के माध्यम से समाज में सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना है।

शंकरदेव शिशु निकेतन का स्थापना दिवस मना

जन जन विचार
...✍ रोहा

चापरमुख मारवाड़ी पट्टी स्थित गीतादेवी हंसरीया स्मृति शंकरदेव शिशु निकेतन का 16वां स्थापना दिवस बड़े ही हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर नन्हे-मुन्ने बच्चों के गीत, नृत्य एवं सांस्कृतिक शोभायात्रा से समूचा क्षेत्र मुखरित हो उठा।

स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में प्रातः निकेतन संचालन समिति के अध्यक्ष एवं रोहा मीन महाविद्यालय के पूर्व डीन डॉ. कृष्ण कांत तामुली द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इसके पश्चात संचालन समिति सदस्य मलिन ज्योति बोरा एवं पत्रकार सोयल खेतान द्वारा निकेतन प्रांगण में पौधरोपण किया गया।

पूर्व अध्यापिका एवं रोहा पौरसभा की उप-पौरपति अनिमा दास द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक शोभायात्रा का उद्घाटन किया गया। यह शोभायात्रा निकेतन परिसर से प्रारंभ होकर रोहा-चापरमुख जंक्शन सहित प्रमुख मार्गों से गुजरती हुई पुनः निकेतन प्रांगण में संपन्न हुई। शोभायात्रा में विभिन्न जाति-जनजातियों की कला एवं संस्कृति की सुंदर झलक देखने को मिली। शोभायात्रा के उपरांत निकेतन परिसर में आयोजित खुली सभा में विद्यार्थियों ने गीत-नृत्य प्रस्तुत कर उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रधानाचार्य नव ज्योति तामुली के संचालन में आयोजित कार्यक्रम के दौरान निकेतन की प्राचीर पत्रिका का विमोचन संचालन समिति के उपाध्यक्ष बलोराम सैकया ने किया।

राजस्थानी लोकगायन के बेताज बादशाह बद्री व्यास

जन जन विचार
...✍ अंकित मिश्र

असम ही नहीं, बल्कि पूरे पूर्वोत्तर भारत में राजस्थानी होली की अपनी एक विशिष्ट पहचान और रंगत है। होली आने से लगभग एक माह पूर्व ही गली-मोहल्लों में टोलियां बनाकर चंग की थाप पर फाग और होली के गीत गाते हुए लोग दिखाई देने लगते हैं। यह मस्ती करीब एक महीने तक चलती है, जिसमें हर दिन नए रंग और नए उत्साह का समावेश होता है।

इस उल्लास को और अधिक जीवंत बनाने के लिए अब न केवल स्थानीय लोक कलाकार तैयार हो चुके हैं, बल्कि राजस्थान के विभिन्न अंचलों से भी कलाकार यहां आकर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं और लोगों को होली के रस में सराबोर कर देते हैं। होली के अवसर पर गुवाहाटी सहित पूरे पूर्वोत्तर में राजस्थानी होली धमाल के कलाकारों का एक भव्य संगम देखने को मिलता है, जो इस शस्य-श्यामला धरती पर धोरा री धरती की सोंधी खुशबू बिखेर देता है।

किंतु कलाकारों के इस आकाश में नक्षत्रों के समान चमकते समूह के बीच लोकगायक बद्री व्यास चंद्रमा के समान दीप्तिमान दिखाई देते हैं। सच तो यह है कि पूर्वोत्तर में फागण की धमाल को नया आयाम देने वाले कलाकार बद्री व्यास ही हैं। उन्होंने ही सबसे पहले गली-मोहल्लों की टोलियों को मंचीय स्वरूप प्रदान किया, जो आज एक विशाल सांस्कृतिक परंपरा बन चुका है।

बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्हें यह प्रेरणा असम के महान संगीतज्ञ भूपेन हजारिका से मिली थी। भूपेन दा ने न केवल उन्हें अपना वाद्ययंत्र प्रदान किया, बल्कि लोकगायन के महासागर में उतरने का साहस भी दिया। उनके आशीर्वाद से बद्री व्यास ने भगवान नटराज का स्मरण कर इस क्षेत्र में कदम रखा और आज भी मां सरस्वती उनकी साधना की रक्षा कर रही हैं।

बद्री व्यास के आगमन के बाद पूर्वोत्तर में फाग और होली संगीत की दिशा ही बदल गई। अनेक कलाकार यहां आने लगे, परंतु आज भी कोई उस ऊंचाई को नहीं छू सका, जहां बद्री व्यास पिछले तीन दशकों से राजस्थानी लोकगायन के बेताज बादशाह बने खड़े हैं।

उन्हें श्रोताओं से जो प्रेम, सम्मान और लोकप्रियता मिली है, वह बेमिसाल है। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने अपनी कला को कभी सीमित नहीं रखा। उन्होंने असमिया और अन्य भाषाओं के कलाकारों को भी राजस्थानी लोकगायन से जोड़ा। इससे न केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ा, बल्कि अनेक कलाकारों को रोजगार भी मिला।

बद्री व्यास सच्चे अर्थों में कलाप्रेमी कलाकार हैं, जो दूसरों की प्रतिभा का सम्मान करते हैं और उन्हें आगे बढ़ने का अवसर देते हैं।

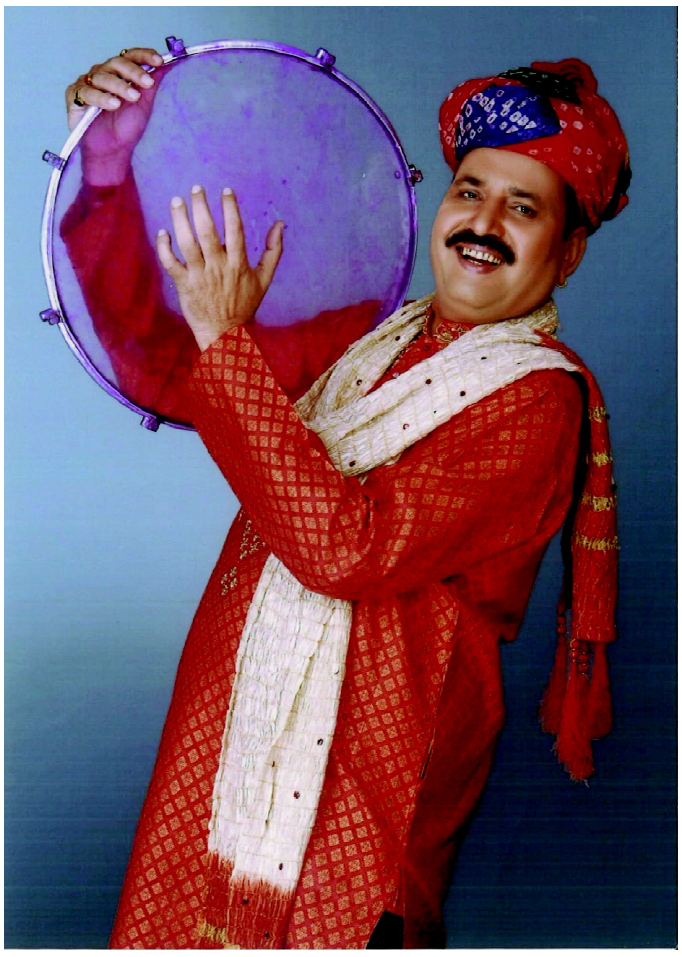

फागुन की मस्ती और चंग की थाप

बसंत पंचमी के बाद ही गली-चौराहों पर चंगों की थाप सुनाई देने लगती है और होली प्रेमियों का मन रंगों की फुहारों में भीगने लगता है। जैसे-जैसे होली पास आती है, मौसम भी बावरा और बेईमान-सा हो जाता है।

होली केवल रंग, अबीर, गुलाल और पिचकारी का पर्व नहीं है, बल्कि यह फगुवाहटी बयार, मस्ती और हंसी-ठिठोली का उत्सव है, जिसमें बच्चा, जवान और बूढ़ा-सभी डूब जाना चाहते हैं। फागुन आते ही आंखों के सामने मस्ती, रंग और लोकगीतों की झलक तैरने लगती है-

'होलिया में उड़े रे गुलाल'
'चालो देखण ने बाइसा'

राजस्थान की लोकपरंपरा में फागुन के गीत और चंग की थाप का विशेष महत्व है। जब घुंघरुओं की झंकार के साथ टोलियां झूमती हैं, तब वातावरण और भी अधिक संगीतमय हो उठता है। होली की मस्ती हो और चंग न बजे ऐसा कैसे संभव है?

गुवाहाटी में होली की रंगीन परंपरा

होली के आगमन के साथ ही गुवाहाटी के हर चौराहे पर चंगों की गूंज सुनाई देने लगती है। जब रंगीलो राजस्थान, होली की टोली और अन्य समूह अपने सुरों की दस्तक देते हैं, तो होली प्रेमी उन्हें देखने-सुनने को आतुर हो उठते हैं।

फैंसी बाजार में फ्रेंड्स क्लब के तत्वावधान में होने वाले सांस्कृतिक आयोजन की लोग बेसब्री से प्रतीक्षा करते हैं। आधुनिकता की चादर भले ही समय ने ओढ़ ली हो, लेकिन आज भी राजस्थानी समाज की लोकसंस्कृति होली पर पूरी शान से झलकती है।

रंगीलो राजस्थान और होली की टोली जैसी टीमें सुदूर पूर्वोत्तर में राजस्थानी परंपराओं को जीवंत बनाए हुए हैं।

यही कारण है कि वे आज केवल पूर्वोत्तर ही नहीं, बल्कि पूरे देश में राजस्थानी लोकगायन और होली धमाल के चुनिंदा कलाकारों में गिने जाते हैं। वे केवल 'बद्री' नहीं, बल्कि 'बद्री विशाल' हैं।

कुल मिलाकर, असम सहित पूरे देश के संगीतप्रेमियों को फगुवाहटी तेवरों और रंगीन सुरों से सराबोर करने के लिए इस बार भी बद्री व्यास अपनी पूरी टीम के साथ होली का धमाल मचाने को तैयार हैं।

होली की परंपरा को सहेजने में सुरगंगा म्यूजिकल टीम की भूमिका

लोकगायक बद्री व्यास की 'सुरगंगा म्यूजिकल टीम' इस परंपरा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वे पारंपरिक और आधुनिक होली गीतों के माध्यम से दशकों से श्रोताओं को आनंदित करते आ रहे हैं।

इस वर्ष भी बद्री व्यास अपनी टीम के साथ फागुन की फिजा में रंग घोलने को तैयार हैं। उल्लेखनीय है कि इस बार होली 4 मार्च (बुधवार) को है। पूर्वोत्तर में पारंपरिक होली को मंच पर लाने का श्रेय बद्री व्यास को ही जाता है। तीन दशक पूर्व उन्होंने इसकी नींव रखी। पहले यहां स्टेज शो की परंपरा नहीं थी, जिसे उन्होंने छोटे स्तर से आरंभ किया और आज यह विशाल रूप ले चुकी है।

उनके कार्यक्रमों की विशेषता यह है कि उनमें अधिकांश कलाकार स्थानीय होते हैं-चाहे वे संगीतकार हों, गायिकाएं हों या नृत्यांगनाएं। उन्होंने न केवल राजस्थानी भाषा से कलाकारों को परिचित कराया, बल्कि वाद्ययंत्रों की बारीकियां भी सिखाईं। असम में राजस्थानी होली एल्बम की शुरुआत भी बद्री व्यास ने ही की। सुरगंगा के बैनर तले बने अनेक एल्बम सुपरहिट हुए और उन्होंने पूरे पूर्वोत्तर में अपनी पहचान बनाई।

बद्री व्यास कहते हैं, 'अब सुरगंगा म्यूजिकल ग्रुप इतना बड़ा हो चुका है कि देशभर से कलाकार जुड़ गए हैं। पूरे वर्ष मुझे कार्यक्रमों के निमंत्रण मिलते रहते हैं। यह श्रोताओं का मेरे प्रति सम्मान है।' जहां भी सुरगंगा की टीम मंच पर उतरती है, वहां अपनी अमिट छाप छोड़ जाती है। श्रोताओं का भरपूर प्रेम और सम्मान उन्हें हर स्थान पर मिलता है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

शिक्षा की मजबूत नींव

करना है। इसके अंतर्गत बेहतर भवन, स्मार्ट कक्षाएं, आधुनिक प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय और डिजिटल संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे।

इस महत्वाकांक्षी योजना पर करीब 765 करोड़ रुपए का निवेश किया जा रहा है, जो 'अटल अविचल अग्रगामी' असम परियोजना के तहत संचालित है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण और प्रतिस्पर्धी शिक्षा के लिए तैयार करना है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, 'मजबूत बुनियादी ढांचे के बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कल्पना संभव नहीं है। हमारी कोशिश है कि असम का हर बच्चा बड़े सपने देखे और उन्हें पूरा करे।'

नई और प्रस्तावित इमारतों में स्वच्छ पेयजल, शौचालय, स्मार्ट क्लास, आधुनिक लैब, पुस्तकालय और डिजिटल सुविधाएं विकसित की जाएंगी, जिससे छात्रों और शिक्षकों दोनों को बेहतर शैक्षणिक माहौल मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अभियान सरकार के 'विकसित असम' के विजन का अहम हिस्सा है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही बच्चों को नवाचार, आत्मनिर्भरता और राज्य के विकास में भागीदारी के लिए सक्षम बनाती है।

शिक्षा विभाग के अधिकारियों के अनुसार, यह पहल अब केवल भवन निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राज्यव्यापी शिक्षा परिवर्तन का आधार बन चुकी है। इसका लक्ष्य हर बच्चे तक समान, समावेशी और आधुनिक शिक्षा पहुंचाना है।

संपादकीय

यूएस से ट्रेड डील

भारत और अमेरिका के बीच हाल ही में हुआ व्यापार समझौता देश की अर्थव्यवस्था के लिए राहत भरा संकेत है। अमेरिकी सरकार द्वारा भारत पर लगाए गए जवाबी शुल्क को 25 प्रतिशत से घटाकर 18 प्रतिशत करना भारतीय निर्यातकों के लिए सकारात्मक कदम माना जा सकता है। इससे वस्त्र, चमड़ा और अन्य श्रम-प्रधान उद्योगों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में नई मजबूती मिलेगी।

इस समझौते का असर शेयर बाजार और निवेशकों के भरोसे पर भी दिखाई दिया है। पिछले कुछ वर्षों में व्यापारिक अनिश्चितता के कारण विदेशी निवेश में कमी आई थी। अब उम्मीद है कि पूंजी प्रवाह बढ़ेगा और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को भी बढ़ावा मिलेगा।

हालांकि यह राहत स्थायी तभी बन सकती है, जब सरकार इसे सुधारों से जोड़कर आगे बढ़ाए। केवल शुल्क में कमी से दीर्घकालीन विकास संभव नहीं है। घरेलू उद्योगों की प्रतिस्पर्धा क्षमता बढ़ाना, निर्यात बाजारों का विविधीकरण करना और बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाना समय की आवश्यकता है।

अमेरिकी व्यापार नीति के अस्थिर स्वभाव को देखते हुए भारत को सतर्क भी रहना होगा। किसी एक देश पर अत्यधिक निर्भरता भविष्य में जोखिम बन सकती है। इसलिए अन्य देशों के साथ व्यापारिक संबंधों को मजबूत करना जरूरी है।

सुलगता सवाल आपके विचार

माहवारी, गरिमा और संवैधानिक अधिकार

माहवारी प्रकृति की एक सामान्य और आवश्यक प्रक्रिया है, लेकिन भारतीय समाज ने इसे लंबे समय तक लज्जा, अशुद्धता और वर्जना से जोड़कर देखा है। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि लाखों लड़कियां शारीरिक कष्ट के साथ-साथ मानसिक पीड़ा और सामाजिक भेदभाव झेलती रहीं। ऐसे में सुप्रीम कोर्ट का हालिया निर्णय एक ऐतिहासिक और संवेदनशील कदम है।

न्यायालय ने मासिक धर्म स्वास्थ्य को संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन और गरिमा के अधिकार से जोड़ा है तथा स्कूलों में मुफ्त और सुरक्षित सैनिटरी पैड, स्वच्छ शौचालय और पानी की व्यवस्था अनिवार्य की है। इसका उद्देश्य केवल सुविधा देना नहीं, बल्कि लड़कियों की शिक्षा को बाधित होने से बचाना और उन्हें आत्मसम्मान के साथ आगे बढ़ने का अवसर देना है।

यह फैसला सामाजिक सोच को बदलने की दिशा में भी महत्वपूर्ण है। माहवारी को 'महिलाओं का निजी विषय' मानकर चुप रहना अब स्वीकार्य नहीं हो सकता। इसमें पुरुषों, शिक्षकों और समाज की समान भूमिका आवश्यक है।

हालांकि, यह निर्णय तभी सार्थक होगा जब इसे ईमानदारी से लागू किया जाए। कानून मार्ग दिखा सकता है, पर मानसिकता बदलना समाज की जिम्मेदारी है।

यह फैसला महिला अधिकार, स्वास्थ्य और शिक्षा को एक साथ मजबूती देता है। माहवारी पर खुली और सम्मानजनक सोच ही एक सभ्य और प्रगतिशील भारत की पहचान बन सकती है।

जमीन के नीचे दौड़ेगी रेल

जन जन विचार
...✍ नीरज कुमार दुबे

केंद्र सरकार ने अब सिलीगुड़ी गलियारे की सुरक्षा और मजबूती के लिए बड़ा कदम उठाया है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने घोषणा की है कि करीब चालीस कोस लंबे हिस्से में भूमिगत रेल पटरियां बिछाने की योजना बनाई गई है।

पूर्वोत्तर को देश के बाकी हिस्से से जोड़ने वाला सिलीगुड़ी गलियारा एक बार फिर राष्ट्रीय चर्चा के केंद्र में है। यह धरती की वही पतली पट्टी है जिसे आम बोलचाल में चिकन नेक कहा जाता है। सबसे संकरे हिस्से में इसकी चौड़ाई करीब पच्चीस कोस से भी कम मानी जाती है। इसके एक ओर नेपाल, दूसरी ओर भूटान और पास ही बांग्लादेश की सीमा है। यही रास्ता पूर्वोत्तर के आठों राज्यों के लिए जीवन रेखा है। सेना की आवाजाही हो, अनाज और ईंधन की आपूर्ति हो या व्यापार, सब कुछ काफी हद तक इसी राह से गुजरता है।

केंद्र सरकार ने अब इस गलियारे की सुरक्षा और मजबूती के लिए बड़ा कदम उठाया है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने घोषणा की है कि करीब चालीस कोस लंबे हिस्से में भूमिगत रेल पटरियां बिछाने की योजना बनाई गई है। तीन मील हाट से रंगापानी के बीच यह भूमिगत मार्ग बनेगा। साथ ही पूरे मार्ग को चार पटरियों वाला बनाने का प्रस्ताव भी वार्षिक लेखा योजना में रखा गया है ताकि यातायात की क्षमता कई गुना बढ़ सके।

हाल के समय में इस गलियारे को लेकर कई तरह की गीदड़ भभकियां सामने आई थीं। बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के बाद कुछ समूहों ने चिकन नेक को दबाने जैसी बातें कही थीं। कुछ बयान ऐसे भी आए, जिनमें इस इलाके को ग्रेटर बांग्लादेश की कल्पना से जोड़ा गया। ढाका की चीन से बढ़ती नजदीकी ने भी चिंता बढ़ाई। वर्ष 2017 में डोकलाम टकराव के समय भी सैन्य योजनाकारों ने सिलीगुड़ी हिस्से की कमजोरी पर ध्यान दिलाया था। साफ था कि यदि यहां बाधा आई तो पूर्वोत्तर लगभग कट सकता है। इसी पृष्ठभूमि में भूमिगत रेल को संकट के समय भी संपर्क बनाए रखने की योजना के रूप में देखा जा रहा है। भूमिगत मार्ग पर सीधा प्रहार करना कठिन होगा। इससे सैनिक साजो सामान और आम जन जीवन की आपूर्ति निरंतर बनी रह सकती है।

यदि चिकन नेक जैसे संवेदनशील इलाके में भूमिगत रेल मार्ग बनता है तो यह कौशल, साहस और दूरदर्शिता का भी प्रदर्शन होगा। भारत पहले ही जम्मू-कश्मीर में दुनिया के सबसे ऊंचे रेल पुल का निर्माण कर अपनी प्रतिभा दिखा चुका है। पहाड़ चीरकर और पहाड़ों के ऊपर पुल खड़ा करने वाले यही हाथ जमीन के भीतर भी सुरक्षित मार्ग बना सकते हैं। वैसे भी कठिन भौगोलिक हालात को मात देना भारतीय इंजीनियरों की पहचान बन चुकी है, इसलिए चिकन नेक में भूमिगत रेल केवल सुरक्षा कदम नहीं, बल्कि देश की तकनीकी ताकत और आत्मविश्वास का प्रतीक भी होगी।

देखा जाए तो यह गलियारा केवल भौगोलिक पट्टी नहीं बल्कि राष्ट्रीय एकता की धुरी है। इसलिए इसकी सुरक्षा पर किसी तरह की ढिलाई नहीं हो सकती। भूमिगत रेल, चार पटरी विस्तार और कड़ी निगरानी को उसी दिशा में उठे कदम के रूप में देखा जा रहा है। सामरिक दृष्टि से देखें तो यह इलाका चार देशों के बीच घिरा है। सीमा पार से होने वाली हर हलचल यहां असर डालती है। चीन की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षा, बांग्लादेश की अंदरूनी राजनीति, और खुले सीमा प्रबंध वाले इलाकों की जटिलता, सब मिलकर इस पट्टी को संवेदनशील बनाते हैं। ऐसे में भूमिगत रेल केवल ईंट पत्थर का काम नहीं, बल्कि संकट काल में जीवन रेखा को जिंदा रखने का उपाय है। युद्ध या बड़े तनाव की स्थिति में खुली पटरियां आसान निशाना बन सकती हैं, पर जमीन के भीतर चलने वाली रेल को रोकना कठिन होगा।

यदि चिकन नेक जैसे संवेदनशील इलाके में भूमिगत रेल मार्ग बनता है तो यह कौशल, साहस और दूरदर्शिता का भी प्रदर्शन होगा। भारत पहले ही जम्मू-कश्मीर में दुनिया के सबसे ऊंचे रेल पुल का निर्माण कर अपनी प्रतिभा दिखा चुका है।

इसका आर्थिक पक्ष भी कम अहम नहीं है। पूर्वोत्तर क्षेत्र प्राकृतिक संसाधन, जल शक्ति, कृषि उपज और सीमा पार व्यापार की अपार संभावना रखता है। यदि संपर्क मजबूत होगा तो उद्योग, पर्यटन और व्यापार को बल मिलेगा। चार पटरी मार्ग का अर्थ है तेज आवागमन, कम बाधा और ज्यादा माल ढुलाई। इससे लागत घटेगी और बाजार बढ़ेंगे, जो इलाका कभी दूर माना जाता था वह अवसर का द्वार बन सकता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा और राजनीतिक परिपक्वता

जन जन विचार
...✍ मंजू शर्मा

राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे संवेदनशील विषय पर सार्वजनिक वक्तव्य देते समय विशेष सतर्कता अपेक्षित होती है। हाल ही में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी द्वारा एक अप्रकाशित सैन्य पुस्तक के कथित अंशों का हवाला देकर चीन की घुसपैठ पर टिप्पणी करना इसी संवेदनशीलता की परीक्षा बन गया। इस बयान ने संसद में तीखा विवाद खड़ा किया और कार्यवाही बाधित हुई।

राष्ट्रीय सुरक्षा केवल राजनीतिक बहस का विषय नहीं, बल्कि देश की एकता, सेना के मनोबल और अंतर्राष्ट्रीय छवि से जुड़ा मामला है। सीमाओं, सैन्य रणनीति और सुरक्षा व्यवस्था से जुड़े तथ्य अधूरे संदर्भ में प्रस्तुत किए जाएं, तो वे भ्रम और अविश्वास को जन्म देते हैं। यही कारण है कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और गृह मंत्री अमित शाह ने इसे राष्ट्रीय हित के विरुद्ध बताया।

विपक्ष का कर्तव्य सरकार से सवाल करना है, लेकिन प्रश्नों की भाषा, मंच और समय भी उतने ही महत्वपूर्ण होते हैं। संसद लोकतांत्रिक संवाद का सर्वोच्च मंच है, न कि आरोप-प्रत्यारोप का अखाड़ा। अप्रकाशित सामग्री को बिना संसदीय प्रक्रिया के उद्घृत करना न केवल नियमों का उल्लंघन है, बल्कि सदन की गरिमा पर भी प्रश्नचिह्न लगाता है।

राहुल गांधी एक प्रभावशाली नेता हैं और उनसे अधिक जिम्मेदारी की अपेक्षा स्वाभाविक है। परिपक्व नेतृत्व का अर्थ केवल तीखे सवाल उठाना नहीं, बल्कि यह समझना भी है कि कौन-सा विषय कैसे और कहां उठाया जाए।

साथ ही, सरकार को भी पारदर्शिता और तथ्यात्मक उत्तर देने की परंपरा को मजबूत करना होगा। केवल नियमों का सहारा लेकर बहस से बचना लोकतंत्र के हित में नहीं है।

संभली मणिपुर की नैया, खेमचंद बने खेवनहार

जन जन विचार
...✍ इंफाल

मणिपुर के नव नियुक्त मुख्यमंत्री युमनाम खेमचंद सिंह ने शपथ ग्रहण के कुछ ही घंटों बाद अपनी सरकार की पहली कैबिनेट बैठक की अध्यक्षता कर सुशासन और स्थिरता की दिशा में मजबूत संकेत दिया। यह बैठक मुख्यमंत्री सचिवालय के कैबिनेट हॉल में आयोजित हुई।

इससे पहले राज्यपाल अजय कुमार भल्ला ने लोक भवन में आयोजित समारोह में उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। यह समारोह राज्य में नए राजनीतिक दौर की शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है।

नई सरकार में संतुलन और समावेशिता को प्राथमिकता देते हुए नेमचा किपगेन और लोसी दीखो को उपमुख्यमंत्री नियुक्त किया गया है। वहीं, कोंथौजाम गोविंदास सिंह ने गृह मंत्री तथा खुराइजाम लोकेन सिंह ने कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ ली।

शपथ ग्रहण के बाद मुख्यमंत्री खेमचंद सिंह ने कहा कि वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह द्वारा जताए गए विश्वास पर खरा उतरने का हरसंभव प्रयास करेंगे। उन्होंने राज्यवासियों से शांति, सहयोग और आपसी सद्भाव बनाए रखने की अपील की।

मुख्यमंत्री ने कहा, 'मणिपुर में 36 से अधिक समुदाय रहते हैं। सभी की सहभागिता से ही राज्य में स्थिरता और विकास संभव है।' उन्होंने दो उपमुख्यमंत्रियों की नियुक्ति को विविधता और संतुलन का प्रतीक बताया। पहली कैबिनेट बैठक और मुख्यमंत्री के संदेश से स्पष्ट है कि नई सरकार संवाद, स्थिरता और समावेशी विकास को प्राथमिकता देगी। संघर्ष से जूझ रहे मणिपुर के लिए यह नेतृत्व नई उम्मीद और सकारात्मक बदलाव का संकेत माना जा रहा है।

मोदी-शाह के भरोसे पर खरा उतरने का संकल्प

इंफाल। मणिपुर के नव नियुक्त मुख्यमंत्री युमनाम खेमचंद सिंह ने शपथ ग्रहण के बाद कहा कि वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा जताए गए विश्वास पर पूरी निष्ठा से खरा उतरेंगे। उन्होंने राज्य में शांति, स्थिरता और सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए सभी समुदायों से सहयोग की अपील की।

लोक भवन में मीडिया से बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि मणिपुर 36 समुदायों का साझा घर है, जिन्होंने वर्षों से मिलकर राज्य को संजोया है। अब समय है कि हम सब मिलकर शांतिपूर्ण वातावरण बनाने में योगदान दें, उन्होंने कहा। उन्होंने संवाद, सहयोग और आपसी विश्वास को अपनी सरकार की प्राथमिकता बताया।

ताइक्वांडो के दांव-पेच से राजनीति के मैदान तक विजयी रहे हैं खेमचंद

युमनाम खेमचंद सिंह मणिपुर के नए मुख्यमंत्री बनने से राज्य में शांति लौटने की उम्मीद जताई जा रही है। भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें राज्य की कमान सौंपकर नेतृत्व परिवर्तन की नई शुरुआत की है। यह निर्णय दिल्ली में हुई एनडीए विधायक दल की बैठक में लिया गया।

राजनीतिक परिचय : युमनाम खेमचंद सिंह भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं और सिंगजामेई विधानसभा क्षेत्र से विधायक हैं।

2017-2022 : मणिपुर विधानसभा के अध्यक्ष

2022-2025 : ग्रामीण विकास, पंचायती राज और शिक्षा मंत्री

2026 : मणिपुर के मुख्यमंत्री

वे 56वें मुख्यमंत्री के रूप में कार्यभार संभाल रहे हैं।

ताइक्वांडो में भी खास पहचान : 62 वर्षीय खेमचंद सिंह केवल राजनीतिज्ञ ही नहीं, बल्कि एक कुशल मार्शल आर्ट खिलाड़ी भी हैं। 2025 में उन्होंने पारंपरिक ताइक्वांडो में 5वां डैन ब्लैक बेल्ट हासिल किया। यह सम्मान उन्हें ग्लोबल ट्रैडिशनल ताइक्वांडो फेडरेशन द्वारा सियोल में दिया गया। वे यह उपलब्धि पाने वाले पहले भारतीय बने।

सामाजिक और जातीय पृष्ठभूमि : खेमचंद सिंह मैतेई समुदाय से संबंध रखते हैं। मणिपुर की बहु-सांस्कृतिक और बहु जातीय संरचना में उनकी भूमिका को महत्वपूर्ण माना जाता है।

हिंसा के दौर में भूमिका : मई 2023 में मणिपुर में जातीय हिंसा के बाद केंद्र सरकार ने राज्य के मंत्रियों को दिल्ली बुलाकर शांति बहाली पर जोर दिया था। इस दौरान खेमचंद सिंह भी सक्रिय रूप से इसमें शामिल रहे।

राष्ट्रपति शासन की पृष्ठभूमि : मणिपुर में फरवरी 2025 से राष्ट्रपति शासन लागू था, जो पूर्व मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह के इस्तीफे के बाद लगाया गया था।

अब खेमचंद सिंह के नेतृत्व में राज्य में लोकतांत्रिक शासन की वापसी हुई है।

युमनाम खेमचंद सिंह एक अनुभवी नेता, कुशल प्रशासक और अनुशासित व्यक्तित्व के धनी माने जाते हैं। राजनीति के साथ खेल और संस्कृति में उनकी रुचि उन्हें अलग पहचान देती है। संघर्ष और अशांति से गुजरे मणिपुर के लिए उनसे अब शांति, स्थिरता और विकास की नई उम्मीदें जुड़ी हैं। आने वाले समय में उनका नेतृत्व राज्य के भविष्य की दिशा तय करेगा।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

आधारभूत ढाचा सर्वश्रेष्ठ, पर पढ़ाई...

का उद्घाटन किया तो राज्यवासियों के मन में एक सवाल कौंध उठा, आधारभूत ढांचा तो सर्वेश्रेष्ठ है, लेकिन क्या इन भवनों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा विद्यार्थियों को मिल पाएगी।

यह सवाल यूं ही नहीं उठ रहा है। इसके कई कारण हैं।

पहला, राज्य सरकार ने तो करोड़ों रुपए खर्च कर विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए ऐसी विरल आधारभूत संरचना तैयार की है, जैसा शायद ही देश के किसी हिस्से में हो। लेकिन सवाल है कि इस आधारभूत संरचना का सही इस्तेमाल हो पाएगा।

गुवाहाटी में इससे पहले कुछ विद्यालयों को इस तरह की आधारभूत संरचना प्रदान की गई है, लेकिन उनका पूर्ण रूप से उपयोग नहीं हो पा रहा है। विद्यालय में डिजिटल लाइब्रेरी बनी है, लेकिन पुस्तकालय कक्ष को खोल कर बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने वाला कोई नहीं है।

स्मार्ट क्लासरूम का उपयोग केवल एक-या दो शिक्षक अपने विषय के लिए कभी-कभार करते हैं, अधिकांश शिक्षकों को तो स्मार्ट बोर्ड चालू करना भी नहीं आता। ऐसी बात नहीं है कि विभाग ने शिक्षकों को प्रशिक्षित नहीं किया। जिन विद्यालयों में स्मार्ट बोर्ड लगाया गया है, विभाग की ओर से उन विद्यालयों के एक या दो शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया तथा सलाह दी गई कि उनसे विद्यालय के शेष शिक्षक सीख कर अपने-अपने विषय स्मार्ट बोर्ड पर पढ़ाएं। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

विद्यालय में आधुनिक सुविधाओं वाला प्रयोगशाला बनाया गया है और विभाग की ओर से गणित व विज्ञान के किट भी दिए गए हैं, लेकिन अधिकांश विद्यालयों में यह या तो हेडमास्टर साहब के कक्ष की शोभा बढ़ा रहे हैं, या कहीं किसी कोने में धूल फांक रहे हैं।

विद्यालय के टाइल्स लगे शौचालय में पानी नहीं होने और नियमित रूप से साफ-सफाई नहीं होने के कारण दुर्गंध, दीवारों पर गुटखा या पान-मसाला के पीक का दाग, वाश बेसिन में गंदा पानी आदि आम बात है। क्या नए 67 विद्यालयों की तस्वीर इससे अलग दिखेगी, यह यक्ष प्रश्न है।

इन सबके लिए केवल शिक्षक को सीधे दोषी नहीं ठहराया जा सकता। सरकारी विद्यालय के शिक्षक को कक्षा में पढ़ाने से अधिक 'बाहरी' कार्य में लगाया जा रहा है। अरुणोदय योजना के लाभार्थियों की सूची तैयार करने, लभार्थियों के आवास का पुनरीक्षण करने, खेल महारण, कला उत्सव, वीर गाथा, परीक्षा पर चर्चा के लिए विद्यार्थियों का नाम पोर्टल में पंजीकृत करने, मिशन प्रकृति के पोर्टल में विभिन्न डाटा भरने, कृमि की दवा खिलाने जैसे सैकड़ों कामों का बोझ शिक्षक पर है। कई बार तो शीर्ष अधिकारियों का मौखिक निर्देश आता है कि कक्षा छोड़कर पहले 'डाटा एंट्री' के टार्गेट को पूरा करें। सच कहें तो शिक्षक को 'डाटा एंट्री ऑपरेटर' बना दिया गया है। ऐसे में डर है कि स्कूल की 'भव्य इमारत' केवल दिखावे की वस्तु बन कर न रह जाए।

वैसे उपरोक्त सभी कार्यों को विभाग की ओर से शिक्षा का अभिन्न अंग बताया जाता है। और इसे स्वीकार भी किया जाना चाहिए, लेकिन कहते हैं कि किसी भी चीज का अति होना नुकसानदायक होता है। सीधे शब्दों में कहें तो यह 'अति' ही सरकारी विद्यालयों की पढ़ाई में सबसे बड़ी बाधा है।

नशाखोरी भारत के सामने एक गंभीर चुनौती

जन जन विचार
...✍ सुरेंद्र मिश्रा

नशाखोरी केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संकट का रूप ले चुकी है। शराब, तंबाकू, गांजा, हेरोइन, सिंथेटिक ड्रग्स और नशीली दवाओं का दुरुपयोग युवाओं और समाज के लिए गंभीर खतरा बन गया है। मीडिया की भूमिका इस संकट को उजागर करने, जनजागरूकता फैलाने और नीति-निर्माताओं को दिशा देने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

लोकसभा में पेश हालिया रिपोर्ट के अनुसार, हैदराबाद के ड्रग ट्रीटमेंट क्लिनिक में पिछले पाँच वर्षों में नशे के मरीजों की संख्या 1300: बढ़ी है। 2020-21 में जहाँ 701 मरीज थे, वहीं 2024-25 तक यह संख्या 9,832 तक पहुँच गई। विशेषज्ञों का मानना है कि महामारी के बाद तनाव, बेरोजगारी और नशे की आसान उपलब्धता इसके पीछे प्रमुख कारण हैं।

वाराणसी में जुलाई 2025 में आयोजित ''विकसित भारत के लिए नशामुक्त युवा'' शिखर सम्मेलन के बाद 'काशी घोषणापत्र' जारी किया गया। इसमें शैक्षणिक संस्थानों में नशामुक्ति की शपथ दिलाने, जनजागरूकता अभियान चलाने और संयुक्त कार्य समिति बनाने पर जोर दिया गया।

इसी क्रम में जुलाई 2025 में वाराणसी में आयोजित 'विकसित भारत के लिए नशामुक्त युवा' शिखर सम्मेलन के बाद 'काशी घोषणापत्र' जारी किया गया, जिसमें शैक्षणिक संस्थानों में नशामुक्ति की शपथ दिलाने, जनजागरूकता अभियान चलाने और संयुक्त कार्य समिति बनाने पर बल दिया गया। यह स्पष्ट करता है कि सरकार और समाज मिलकर इस समस्या से निपटने के लिए ठोस कदम उठा रहे हैं।

सरकार ने 15 अगस्त 2020 को सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के माध्यम से 'नशा मुक्त भारत अभियान' की शुरुआत की। इस अभियान की रणनीति तीन स्तरों पर आधारित हैं। नशे की आपूर्ति पर नियंत्रण, मांग में कमी और चिकित्सा उपचार। इस अभियान के अंतर्गत अब तक पंद्रह करोड़ से अधिक लोगों को जागरूक किया गया है, लगभग अट्ठाईस लाख व्यक्तियों का उपचार किया गया है और सात सौ से अधिक नि:शुल्क नशामुक्ति केंद्र स्थापित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त दस हजार से अधिक मास्टर स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया गया है ताकि वे समाज में नशामुक्ति का संदेश फैला सकें।

मीडिया की भूमिका इस संकट को उजागर करने और समाधान सुझाने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। समाचार पत्र, टीवी चैनल और डिजिटल प्लेटफॉर्म नशाखोरी के दुष्परिणामों को सामने लाकर जनजागरूकता फैला सकते हैं। वे उन युवाओं की कहानियाँ भी प्रस्तुत कर सकते हैं जिन्होंने नशे से मुक्ति पाई है, जिससे समाज में सकारात्मक प्रेरणा उत्पन्न हो। साथ ही, मीडिया सरकार की योजनाओं और उनकी प्रभावशीलता पर विमर्श कर सकता है और नशे की तस्करी तथा अवैध व्यापार का पर्दाफाश भी कर सकता है।

नशाखोरी का प्रभाव केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह कैंसर, हृदय रोग, मानसिक विकार और असमय मृत्यु का कारण बनता है। आर्थिक दृष्टि से यह परिवार की आय को नष्ट करता है और रोजगार के अवसरों को कम करता है। सांस्कृतिक स्तर पर यह पारिवारिक संबंधों में दरार डालता है और अपराध तथा हिंसा को बढ़ावा देता है।

इन बयानों से स्पष्ट है कि नेताओं और समाजसेवियों को भी यह स्वीकार करना पड़ रहा है कि नशाखोरी से पूर्ण मुक्ति संभव नहीं दिखती, क्योंकि इसके पीछे कई जटिल कारण हैं: प्रशासनिक और कानूनी ढिलाई, युवाओं में प्रयोगात्मक प्रवृत्ति और फैशन का दबाव, बेरोजगारी और मानसिक तनाव, तथा नशे की आसान उपलब्धता और तस्करी नेटवर्क। इस समस्या का समाधान शिक्षा और जागरूकता से शुरू होता है। स्कूल स्तर से ही नशामुक्ति शिक्षा दी जानी चाहिए। पंचायतों और स्थानीय संगठनों को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। नशे की तस्करी और अवैध व्यापार पर कठोर कानून लागू किए जाने चाहिए। आधुनिक सुविधाओं से लैस नशामुक्ति केंद्रों का विस्तार होना चाहिए और मीडिया को निरंतर अभियान चलाकर समाज को जागरूक करना चाहिए।

भारत में नशाखोरी की समस्या गंभीर है, लेकिन नशा मुक्त भारत अभियान और काशी घोषणापत्र जैसे प्रयास आशा की किरण हैं। हाल के नेताओं के बयानों से यह स्पष्ट होता है कि नशाखोरी से पूर्ण मुक्ति कठिन है, परंतु सामूहिक प्रयासों से इसे नियंत्रित किया जा सकता है। यदि सरकार, समाज और मीडिया मिलकर इस दिशा में कार्य करें तो नशामुक्त भारत का सपना साकार हो सकता है। मीडिया को चाहिए कि वह इस विषय को केवल सनसनीखेज खबर के रूप में न दिखाए, बल्कि समाज को जागरूक करने और समाधान सुझाने का माध्यम बने।

इस समस्या से निपटने में कई चुनौतियाँ भी हैं। नशे की आसान उपलब्धता, युवाओं में प्रयोगात्मक प्रवृत्ति, पुनर्वास केंद्रों की सीमित क्षमता और सामाजिक कलंक के कारण लोग उपचार से बचते हैं। इन चुनौतियों का समाधान शिक्षा और जागरूकता से शुरू होता है। स्कूल स्तर से ही नशामुक्ति शिक्षा दी जानी चाहिए। पंचायतों और स्थानीय संगठनों को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। नशे की तस्करी और अवैध व्यापार पर कठोर कानून लागू किए जाने चाहिए। आधुनिक सुविधाओं से लैस नशामुक्ति केंद्रों का विस्तार होना चाहिए और मीडिया को निरंतर अभियान चलाकर समाज को जागरूक करना चाहिए।

भारत में नशाखोरी की समस्या गंभीर है, लेकिन नशा मुक्त भारत अभियान और काशी घोषणापत्र जैसे प्रयास आशा की किरण हैं। यदि सरकार, समाज और मीडिया मिलकर इस दिशा में कार्य करें तो नशामुक्त भारत का सपना साकार हो सकता है। मीडिया को चाहिए कि वह इस विषय को केवल सनसनीखेज खबर के रूप में न दिखाए, बल्कि समाज को जागरूक करने और समाधान सुझाने का माध्यम बने।

उड़ता पंजाब ने पंजाब में ड्रग्स की भयावह स्थिति को सामने लाकर राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर बहस को जन्म दिया। इसके बाद कई राज्यों ने नशामुक्ति अभियान तेज किए।

डियर जिंदगी जैसी फिल्में मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक असंतुलन को नशे से जोड़कर दर्शकों को परामर्श लेने के लिए प्रेरित करती हैं। फुकरे रिटर्न्स जैसे हल्के-फुल्के अंदाज की फिल्मों ने युवाओं को हास्य के माध्यम से गंभीर संदेश दिया कि नशा केवल मजा नहीं, एक जाल है।

फिल्में क्यों असरदार हैं?

भावनात्मक जुड़ाव: फिल्में पात्रों के माध्यम से दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ती हैं, जिससे संदेश गहराई से असर करता है।

विजुअल प्रभाव: नशे के दुष्परिणामों को दृश्य रूप में दिखाना चेतना को झकझोरता है।

जनसंचार का माध्यम: सिनेमा एक ऐसा मंच है जो करोड़ों लोगों तक एक साथ पहुँचता है। भारत में नशामुक्ति पर बनी फिल्मों ने समाज में जागरूकता फैलाने, युवाओं को प्रेरित करने और नशे के दुष्परिणामों को उजागर करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन फिल्मों ने केवल मनोरंजन नहीं किया, बल्कि सामाजिक बदलाव की दिशा में भी प्रभावशाली योगदान दिया है। उदाहरण के तौर पर, वर्ष 2016 में प्रदर्शित फिल्म उड़ता पंजाब ने पंजाब में युवाओं के बीच फैली ड्रग्स की भयावह स्थिति को उजागर किया और इस विषय पर राष्ट्रीय स्तर पर बहस को जन्म दिया, जिससे कई राज्यों में नशामुक्ति अभियान को गति मिली। इसी प्रकार, फिल्म डियर जिंदगी ने मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक अस्थिरता को नशे से जोड़ते हुए दर्शकों को परामर्श लेने और मानसिक स्वास्थ्य पर खुलकर बात करने के लिए प्रेरित किया। वहीं फुकरे रिटर्नस जैसी हास्यप्रधान फिल्म ने युवाओं को मनोरंजन के माध्यम से यह संदेश दिया कि नशा केवल क्षणिक आनंद नहीं, बल्कि एक खतरनाक जाल है।

इन फिल्मों की विशेषता यह है कि वे पात्रों के माध्यम से दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ती हैं, जिससे उनका संदेश गहराई से असर करता है। दृश्य माध्यम होने के कारण नशे के दुष्परिणामों को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है, जो चेतना को झकझोरता है।

सिनेमा एक ऐसा जनसंचार माध्यम है जो करोड़ों लोगों तक एक साथ पहुँचता है, इसलिए यदि इन फिल्मों को शिक्षा, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल किया जाए, तो उनका प्रभाव और भी व्यापक हो सकता है। इस प्रकार, फिल्मों ने समाज को जागरूक करने, युवाओं को सोचने पर मजबूर करने और नीति-निर्माताओं को प्रेरित करने का कार्य किया है।

नशा मुक्ति के लिए सख्त कानून अत्यंत आवश्यक हैं क्योंकि ये नशा बेचने, बनाने और फैलाने पर रोक लगाते हैं। ऐसे कघनून समाज को सुरक्षित रखते हैं और विशेष रूप से युवाओं को नशे के प्रभाव से बचाते हैं। इसके अलावा, पुनर्वास और जागरूकता कार्यक्रम तभी प्रभावी हो सकते हैं जब उनके साथ मजबूत कघनूनी व्यवस्था और नियंत्रण जुड़ा हो।

सरकार ने 15 अगस्त 2020 को सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के माध्यम से 'नशा मुक्त भारत अभियान' की शुरुआत की। इस अभियान की रणनीति तीन स्तरों पर आधारित हैं। नशे की आपूर्ति पर नियंत्रण, मांग में कमी और चिकित्सा उपचार। इस अभियान के अंतर्गत अब तक पंद्रह करोड़ से अधिक लोगों को जागरूक किया गया है, लगभग अट्ठाईस लाख व्यक्तियों का उपचार किया गया है और सात सौ से अधिक नि:शुल्क नशामुक्ति केंद्र स्थापित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त दस हजार से अधिक मास्टर स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया गया है ताकि वे समाज में नशामुक्ति का संदेश फैला सकें। ●●

चार्ल्स डार्विन : विकासवाद का जनक

चार्ल्स डार्विन एक महान वैज्ञानिक थे, जिन्होंने हमें बताया कि धरती पर रहने वाले जीव-जंतु समय के साथ कैसे बदलते और विकसित होते हैं। उनकी खोजों ने विज्ञान की दुनिया को नई दिशा दी। चार्ल्स डार्विन का जन्म 12 फरवरी 1809 को इंग्लैंड में हुआ था। बचपन से ही उन्हें पेड़-पौधों, जानवरों और प्रकृति को देखने में बहुत रुचि थी। वे कीड़े-मकोड़े, पक्षी और पौधों का ध्यान से अध्ययन करते थे। युवावस्था में डार्विन एक जहाज 'एचएमएस बेगल' से पांच साल की समुद्री यात्रा पर निकले। इस यात्रा के दौरान उन्होंने कई देशों और द्वीपों की सैर की। उन्होंने अलग-अलग जगहों के पक्षियों, जानवरों और पौधों को ध्यान से देखा और उनके बारे में नोट्स बनाए। खासकर, गैलापागोस द्वीपसमूह में उन्होंने देखा कि एक ही तरह के पक्षी अलग-अलग जगहों पर थोड़े अलग दिखते हैं। यहीं से उन्हें एक नई सोच मिली।

विकासवाद का सिद्धांत : डार्विन ने बताया कि,

- सभी जीव समय के साथ धीरे-धीरे बदलते रहते हैं।
- जो जीव अपने वातावरण के अनुसार खुद को ढाल लेते हैं, वे जिंदा रहते हैं।
- जो नहीं ढाल पाते, वे धीरे-धीरे खत्म हो जाते हैं।

इसे ही 'प्राकृतिक चयन' (Natural Selection) कहा जाता है। सरल शब्दों में, 'जो सबसे अच्छा ढलता है, वही आगे बढ़ता है।'

प्रसिद्ध पुस्तक : डार्विन ने अपनी खोजों को एक किताब में लिखा- 'On the Origin of Species' (प्रजातियों की उत्पत्ति)। यह किताब विज्ञान की दुनिया में बहुत प्रसिद्ध हुई।

विचार

'किताब आज की दोस्त है, कल की ताकत।'

कहानी

खोया हुआ मैच

अमन मोबाइल पर गेम खेलता रहता था।
एक दिन उसका क्रिकेट मैच था।
वह रात भर गेम खेलता रहा।
सुबह देर से उठा।
मैच में वह ठीक से खेल नहीं पाया।
टीम हार गई।
अमन उदास हो गया।
उसने तय किया-
अब खेल पहले, मोबाइल बाद में।
अगले मैच में वह जीता।

सीख : समय की कद्र करो, मोबाइल से दूरी रखो।

अच्छी आदत

गलती हो जाए तो छुपाने के बजाय सच बोलकर माफी मांग लो।

राष्ट्रीय स्वयं सेक संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य पर ज्योतिकुची के भागवत धाम में 'हिंदू सम्मेलन' के मौके पर गत 1 फरवरी को विद्यार्थियों के बीच आयोजित चित्रांकन प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों की कृतियां-

अरिजित देवनाथ
कक्षा : छठी

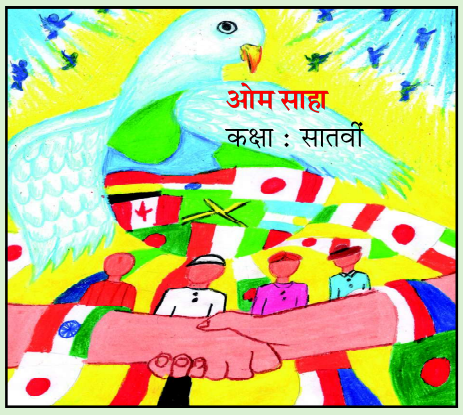
ओम साहा
कक्षा : सातवीं

आराध्या मजुमदार
कक्षा : पांचवीं

अभिजित कश्यप
कक्षा : सातवीं

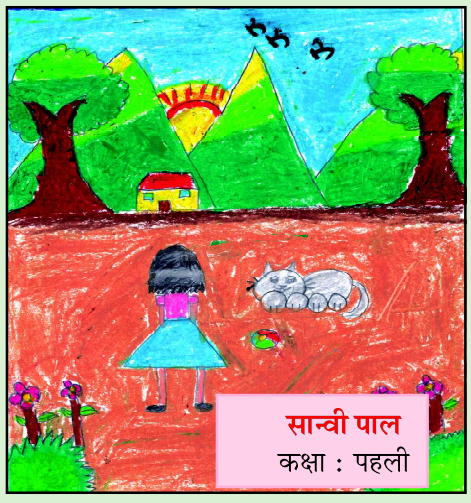
सान्वी पाल
कक्षा : पहली

डिम्पी बरुवा
कक्षा : पाचवीं

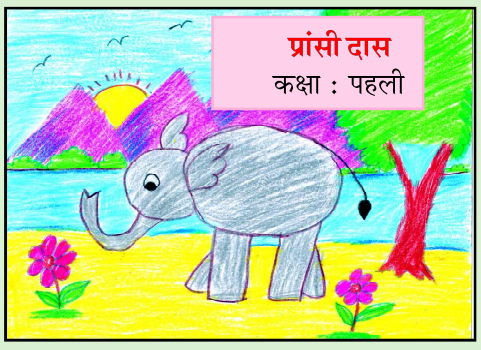
प्रांसी दास
कक्षा : पहली

क्यान दास
कक्षा : के.जी.

अनुष्का साह
कक्षा : चौथी

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का भरोसा
स्कॉलर्स ग्लोबल स्कूल

तेजी से बदलते शैक्षिक परिवेश में जहां गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एक बड़ी चुनौती बनती जा रही है, वहीं गुवाहाटी के कटाहबाड़ी क्षेत्र में स्थित स्कॉलर्स ग्लोबल स्कूल ने कम समय में ही अपनी एक विशिष्ट पहचान स्थापित कर ली है। वर्ष 2021 में स्थापित यह विद्यालय आज अभिभावकों और विद्यार्थियों के लिए विश्वास का प्रतीक बन चुका है।

विद्यालय में नर्सरी से कक्षा 10 तक की शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध है। यहां बच्चों को प्रारंभिक स्तर से ही मजबूत शैक्षणिक आधार प्रदान किया जाता है, जिससे वे आगे की कक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन कर सकें।

भविष्य की दिशा

अपने अनुशासन, गुणवत्ता और निरंतर नवाचार के बल पर 'स्कॉलर्स ग्लोबल स्कूल' आने वाले वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में नई मिसाल कायम करने की दिशा में अग्रसर है। यह विद्यालय न केवल सफल विद्यार्थी तैयार कर रहा है, बल्कि एक बेहतर समाज के निर्माण में भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

शैक्षणिक उपलब्धियां

विद्यालय की सबसे बड़ी उपलब्धि एचएसएलसी (मैट्रिक) परीक्षा में 100 प्रतिशत परिणाम है। विद्यालय के प्रथम मैट्रिक बैच के विद्यार्थियों ने यह सफलता अर्जित की और तब से यह निरंतर बरकरार है। सच कहें तो यह सफलता विद्यार्थियों की मेहनत, शिक्षकों की प्रतिबद्धता और विद्यालय प्रबंधन की दूरदर्शी सोच का प्रत्यक्ष प्रमाण है। नियमित मूल्यांकन, व्यक्तिगत मार्गदर्शन और अतिरिक्त कक्षाओं के माध्यम से छात्रों को परीक्षा के लिए पूरी तरह तैयार किया जाता है।

अनुभवी शिक्षक व आधुनिक शिक्षण पद्धति

स्कॉलर्स ग्लोबल स्कूल में अनुभवी एवं समर्पित शिक्षक विद्यार्थियों को न केवल पाठ्यक्रम तक सीमित रखते हैं, बल्कि उन्हें सोचने, समझने और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। आधुनिक शिक्षण तकनीकों और सरल पद्धतियों के माध्यम से पढ़ाई को रोचक बनाया जाता है।

विद्यालय एनईपी (राष्ट्रीय शिक्षा नीति) के अनुरूप शिक्षा प्रणाली अपनाकर छात्रों को भविष्य के लिए तैयार कर रहा है।

सुरक्षित वातावरण और सर्वांगीण विकास

कुशल प्रशिक्षक की निगरानी में कराटे का अभ्यास करते बच्चे।

विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित, स्वच्छ और मैत्रीपूर्ण वातावरण उपलब्ध है। यहां पढ़ाई के साथ-साथ

-कराटे कक्षाएं (अनुशासन व आत्मरक्षा हेतु)
-कमजोर विद्यार्थियों के लिए रेमेडियल क्लासेस
-नैतिक शिक्षा एवं मूल्य आधारित शिक्षण
-खेल-कूद एवं रचनात्मक गतिविधियां
-व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम
पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

विद्यालय में सीसीटीवी कैमरा और फायर फाइटिंग सिस्टम समेत सुरक्षा के सभी उपाय किए गए हैं। विद्यालय में बच्चों को घर जैसा माहौल प्रदान करने का प्रयास किया जाता है ताकि वे निर्भय होकर पढ़ाई का आनंद उठा सकें।

समाज के प्रति जिम्मेदारी

स्कॉलर्स ग्लोबल स्कूल समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी भी भली-भांति निभा रहा है। आरटीई अधिनियम 2009 के तहत कमजोर वर्ग के बच्चों के लिए 25 फीसदी सीटें आरक्षित रखकर शिक्षा को सभी तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है।

संपर्क विवरण

पता : ए.के. देव रोड, कटाहबाड़ी (5 नंबर मस्जिद के पास) गुवाहाटी-781035, **संपर्क नंबर :** 94355 92931
ई-मेल: cholarsglobalschoolguwahati@gmail.com

नए सत्र 2026-27 के लिए दाखिला जारी

Scholar's Global School
SCHOLAR'S
GLOBAL SCHOOL
ADMISSION GOING ON FOR
ACADEMIC SESSION 2026 - 27
CLASS – NURSERY TO – NINE
HSLC result: 100 % pass
Limited Seats Reserve Your Seat Today
NEP Ready School
WHY CHOOSE SCHOLAR'S GLOBAL SCHOOL
- Experienced and Dedicated Teachers
- Safe and Friendly Learning Environment
- Karate Classes for Discipline & Fitness
- Remedial Classes For Academic Support
- Focus on Overall Development
94355 92931
AS PER SECTION 12.1.C OF RTE ACT 2009, 25% SEATS ARE RESEVED FOR CHILDREN FROM DISADVANTAGED SECTION OF SOCIETY.
A.K.DEV ROAD, KATAHBARI (NEAR 5 NO. MASJID) GHY-35

विनम्रता का मूल्य : रहीम का दोहा

जन जन विचार

...✍ डॉ. मुकेश कुमार
हिंदी विभाग,
चौधरी रणबीर सिंह यूनिवर्सिटी
जींद (हरियाणा)

'बड़े बड़ाई ना करैं, बड़ो न बोलैं बोल।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल॥'

भारतीय नीति-काव्य की उस उदात्त परंपरा का प्रतिनिधि है जिसमें मनुष्य के गुणों, आचरण, स्वभाव और विनम्रता को सर्वश्रेष्ठ मानक माना गया है। रहीम की वाणी सरल होते हुए भी अत्यन्त गंभीर है, क्योंकि वह उस जीवन-दर्शन को अभिव्यक्त करती है जो मनुष्य को भीतर से सुदृढ़, संयमी और स्थिर बनाता है। यह दोहा हमें बताता है कि किसी मनुष्य की श्रेष्ठता उसकी वाणी या उसकी अपनी कही हुई प्रशंसा से नहीं, बल्कि उसके कार्यों, उसके व्यवहार और उसके चरित्र से प्रकट होती है। सच्चा श्रेष्ठ व्यक्ति अपनी महत्ता का प्रदर्शन करने की आवश्यकता नहीं समझता; वह जानता है कि मूल्यवान वस्तु का मूल्य स्वयं उसकी स्वभावगत चमक से पहचाना जाता है।

रहीम पहले चरण में कहते हैं—'बड़े बड़ाई ना करैं'। यहां 'बड़े' शब्द का आशय केवल सामाजिक या बाहरी वर्चस्व से नहीं, बल्कि उन लोगों से है जो अपने गुण, ज्ञान, अनुभव, विनय, और मानवीयता के कारण वास्तव में बड़े हैं। ऐसे लोग अपनी स्वयं की प्रशंसा नहीं करते, क्योंकि वे जानते हैं कि सच्चे गुणों को किसी बाहरी प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं होती। जिस प्रकार सूर्य को यह बताने की आवश्यकता नहीं कि वह प्रकाश देता है, उसी प्रकार महान व्यक्ति को भी यह बताने की आवश्यकता नहीं कि वह महान है। महानता का लक्षण ही यह है कि वह स्वयं को छोटा मानती है; जितना अधिक व्यक्ति का ज्ञान और अनुभव बढ़ता है, उतना ही वह अपने भीतर विनम्रता अनुभव करता है। यह विनम्रता महज एक व्यवहार नहीं बल्कि आंतरिक संस्कार है। भारतीय परंपरा में विनम्रता को ज्ञान का पहला द्वार माना गया है। वेद, उपनिषद् और गीता में 'अमानित्व' को सर्वोपरि गुण कहा गया है; अर्थात् जो मनुष्य अहंकार से दूर है, वही सच्चा ज्ञानी है। रहीम इसी गहन परंपरा से प्रेरित होकर कहते हैं कि बड़ा मनुष्य बड़ाई नहीं करता, क्योंकि बड़ाई सदैव दूसरों का अधिकार है, स्वयं का नहीं।

दोहा के दूसरे चरण में रहीम कहते हैं—'बड़ो न बोलैं बोल।' इससे आशय यह है कि वास्तव में श्रेष्ठ व्यक्ति अपने बारे में बहुत कम बोलता है। कम बोलना उसके व्यक्तित्व की कमजोरी नहीं, बल्कि परिपक्वता का लक्षण है। जो मनुष्य अपने कार्यों पर ध्यान देता है, वह अपनी प्रशंसा में समय व्यर्थ नहीं करता। इसके विपरीत जो मनुष्य कम गुणी या कम आत्मविश्वासी होता है, वही बार-बार अपने बारे में बोलकर स्वयं को स्थापित करना चाहता है। यह सामान्य मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जो व्यक्ति भीतर से जितना अस्थिर होता है, वह बाहर उतना ही अधिक शोर करता है; और जो भीतर से जितना स्थिर होता है, वह बाहर उतना ही शांत रहता है। रहीम इस मनोवैज्ञानिक सत्य को अत्यंत सहज शब्दों में प्रस्तुत करते हैं। जब वे कहते हैं कि 'बड़ो न बोलैं बोल', तो वे बताते हैं कि श्रेष्ठता का आधार वाणी नहीं, कर्म है। बड़े लोग बोलने में संयम रखते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि शब्दों की सीमा होती है, परंतु कर्म का प्रभाव असीम होता है।

दोहा के तीसरे भाग में रहीम अत्यंत सुन्दर रूपक प्रस्तुत करते हैं-'रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल।' हीरा यहां गुणों का प्रतीक है। जैसे हीरा अपनी चमक, कठोरता, निखार और दुर्लभता के कारण मूल्यवान होता है, वैसे ही मनुष्य के गुण उसे महान बनाते हैं। परंतु हीरा कभी यह नहीं कहता कि मेरा मूल्य लाख है। वह मौन रहता है, किंतु उसकी चमक ही उसका परिचय दे देती है। यही रूपक मनुष्य के लिए भी लागू होता है। वास्तव में मूल्यवान व्यक्ति के भीतर वह आत्मविश्वास होता है कि उसके गुण बिना कहे भी दिखाई देंगे। उसे यह बताने की जरूरत नहीं कि वह कितना योग्य है, कितना विद्वान है, कितना कुशल है। जो व्यक्ति स्वयं को 'हीरा' कह कर घोषित करेगा, उसकी वास्तविकता पर संदेह उत्पन्न हो जाएगा। रहीम का हीरा रूपक इस बात को और भी स्पष्ट करता है कि सच्चे मूल्य का आधार आंतरिक गुणवत्ता है, न कि बाहरी प्रदर्शन। विज्ञापन की आवश्यकता उस वस्तु को होती है जिसमें आंतरिक श्रेष्ठता न हो; परंतु हीरा, जिसका मूल्य उसके भीतर निहित है कभी स्वयं को बेचने की कोशिश नहीं करता।

यह दोहा अहंकार-विरोधी और दंभ-विरोधी है। रहीम जानते थे कि अहंकार मनुष्य को भीतर से खोखला बना देता है। अहंकार मनुष्य को न केवल दूसरों से दूर करता है बल्कि आत्मविकास के मार्ग को भी रोक देता है। जो व्यक्ति स्वयं को पूर्ण समझ बैठता है, वह नए ज्ञान, नए अनुभव और नई समझ का ग्रहण नहीं कर पाता। इसके विपरीत, विनम्र व्यक्ति सदैव सीखने को इच्छुक रहता है। विनम्रता ही व्यक्ति को प्रगति के मार्ग पर बनाए रखती है। रहीम के अनुसार, जो व्यक्ति अपनी प्रशंसा करता फिरता है, वह अंदर से असुरक्षित होता है। उसे पता होता है कि दुनिया उसकी वास्तविकता को समझ लेगी, इसलिए वह लगातार शब्दों का सहारा लेता है। शब्दों की यह अधिकता उसकी कमजोरी को उजागर कर देती है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति शांत और संयमी है, वह भीतर से मजबूत होता है। वह जानता है कि उसके कर्म ही उसके मूल्य का निर्धारण करेंगे।

इस दोहे का सामाजिक अर्थ भी अत्यंत व्यापक है। समाज में वही लोग सम्मान पाते हैं जिनमें सरलता, नम्रता और शालीनता होती है। जो व्यक्ति अपने गुणों की प्रशंसा स्वयं करता है, समाज उसे स्वीकार नहीं करता। समाज उन लोगों को सम्मान देता है जो अपने आचरण से आदर्श प्रस्तुत करते हैं। इतिहास इसी सत्य की पुष्टि करता है। जिन लोगों ने महान कार्य किए चाहे वे संत हों, वैज्ञानिक हों, दार्शनिक हों या नेता उन्होंने अपनी ही बड़ाई नहीं की। उन्होंने अपने कर्मों को बोलने दिया। गांधी, विवेकानंद, अब्दुल कलाम, रानी लक्ष्मीबाई, तिलक, रामकृष्ण परमहंस इन सभी महापुरुषों ने अपने जीवन से उदाहरण प्रस्तुत किया; उन्होंने कभी घोषणा नहीं की कि वे महान हैं। रहीम कहते हैं कि यही महानता का वास्तविक स्वरूप है, वह बिना शब्दों के भी उजागर हो जाती है।

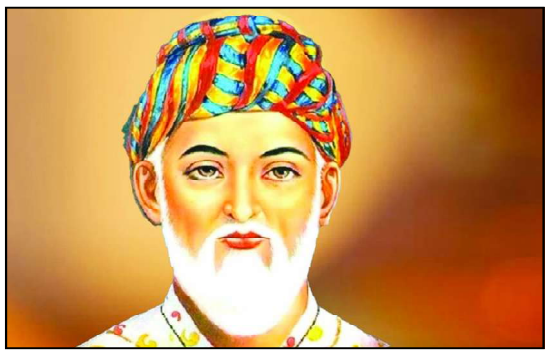

समाज में वही लोग सम्मान पाते हैं जिनमें सरलता, नम्रता और शालीनता होती है। जो व्यक्ति अपने गुणों की प्रशंसा स्वयं करता है, समाज उसे स्वीकार नहीं करता। समाज उन लोगों को सम्मान देता है जो अपने आचरण से आदर्श प्रस्तुत करते हैं। इतिहास इसी सत्य की पुष्टि करता है। जिन लोगों ने महान कार्य किए चाहे वे संत हों, वैज्ञानिक हों, दार्शनिक हों या नेता उन्होंने अपनी ही बड़ाई नहीं की। उन्होंने अपने कर्मों को बोलने दिया। गांधी, विवेकानंद, अब्दुल कलाम, रानी लक्ष्मीबाई, तिलक, रामकृष्ण परमहंस इन सभी महापुरुषों ने अपने जीवन से उदाहरण प्रस्तुत किया; उन्होंने कभी घोषणा नहीं की कि वे महान हैं।

आध्यात्मिक अर्थ में यह दोहा और भी गहरा हो जाता है। मौन भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का प्रमुख अंग है। मौन से मन की गहराई का बोध होता है, और आंतरिक प्रकाश बाहर स्वयं प्रकट होता है। जैसे दीपक बिना बोले प्रकाश देता है, वैसे ही ज्ञानी व्यक्ति बिना बोले ज्ञान देता है। जो सच्चा साधक है, वह दंभ नहीं करता क्योंकि उसे ज्ञात होता है कि उपलब्धि का श्रेय स्वयं को नहीं बल्कि ईश्वर की कृपा और साधना की निरंतरता को जाता है। रहीम के 'हीरा' का मौन उसी आध्यात्मिक मौन का प्रतीक है जहां व्यक्ति आंतरिक रूप से प्रकाशित होता है परंतु बाह्य रूप से शांत रहता है।

आधुनिक युग में यह दोहा अत्यंत प्रासंगिक हो गया है। आज का समय आत्मविज्ञापन का समय है। लोग सोशल मीडिया पर अपनी उपलब्धियों, अपनी सफलताओं, अपने गुणों का प्रदर्शन करते हैं। हर व्यक्ति दूसरों को यह दिखाना चाहता है कि वह कितना महत्वपूर्ण है। ऐसे समय में रहीम का यह संदेश पहले से अधिक आवश्यक है कि सच्ची गुणवत्ता को किसी प्रकार के प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं होती। आज भी जीवन के हर क्षेत्र में वही लोग दीर्घकाल तक सम्मानित रहते हैं जो विनम्र, संयमी और कर्मशील होते हैं। जो लोग अत्यधिक बोलते हैं, बहुत अधिक दिखावा करते हैं, वे क्षणिक प्रसिद्धि तो प्राप्त कर सकते हैं, पर स्थायी प्रतिष्ठा नहीं।

इस दोहे का अंतिम सार यही है कि मनुष्य का वास्तविक मूल्य उसके शब्दों में नहीं, उसके कर्मों में निहित होता है। जो जितना अधिक महान होता है, उतना ही अधिक मौन रहता है। हीरे की तरह उसका मूल्य उसकी चमक से ही संसार को दिखाई देता है। वह अपनी कीमत स्वयं नहीं बताता। रहीम का यह दोहा केवल एक सामान्य नीति नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू होने वाला गंभीर दार्शनिक मार्गदर्शन है। यह मनुष्य को सिखाता है कि अहंकार से गुण घटते हैं और विनम्रता से गुण बढ़ते हैं। बड़ाई करना ओछापन है; बड़ापन स्वयं उजागर होता है। जो मनुष्य इस सत्य को समझ लेता है, वह अपने जीवन में सहज रूप से विनम्र, स्थिर, संतुलित और उज्ज्वल बन जाता है। यही रहीम का संदेश है, हीरा चाहे जितना मूल्यवान हो, वह चुप रहता है; उसकी चमक ही उसका परिचय देती है।

विकसित भारत का बजट

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

केंद्रीय बजट 2026 के जरिए सरकार ने साफ संकेत दिया है कि उसकी प्राथमिकता आर्थिक विकास को तेज करना और देश को मजबूती की राह पर आगे बढ़ाना है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा है कि इस बजट में निवेश को केंद्र में रखकर योजनाएं बनाई गई हैं, ताकि रोजगार, उद्योग और बुनियादी ढांचे को नई गति मिल सके। साथ ही, नियंत्रित राजकोषीय घाटा सरकार की जिम्मेदार आर्थिक नीति को भी दर्शाता है।

केंद्रीय बजट 2026 को लेकर वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने स्पष्ट किया है कि सरकार की प्राथमिकता देश की आर्थिक वृद्धि को गति देना है। इसी उद्देश्य से बजट में निवेश को बढ़ावा देने और राजकोषीय मजबूती बनाए रखने पर विशेष जोर दिया गया है।

बजट पेश करने के बाद मीडिया से बातचीत में उन्होंने कहा कि अगले वित्त वर्ष के लिए राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 4.3 प्रतिशत रखा गया है, जो सरकार की संतुलित और जिम्मेदार आर्थिक नीति को दर्शाता है।

निवेश से मिलेगी विकास को रफ्तार : वित्त मंत्री ने कहा कि देश में बुनियादी ढांचे, उद्योग और रोजगार को मजबूत करने के लिए निवेश को प्राथमिकता दी गई है। सरकार का मानना है कि मजबूत निवेश से आर्थिक गतिविधियों में तेजी आएगी और आम लोगों को इसका सीधा लाभ मिलेगा।

उन्होंने यह भी कहा कि वैश्विक अनिश्चितताओं के कारण सोने की कीमतों में उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। कई केंद्रीय बैंक सोने में निवेश कर रहे हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि निवेशक किसी एक मुद्रा पर पूरी तरह निर्भर नहीं रहना चाहते।

सट्टेबाजी पर लगेगा अंकुश : बजट में फ्यूचर एंड ऑप्शन कारोबार में सट्टेबाजी को कम करने के लिए सिक्योरिटीज ट्रांजैक्शन टैक्स बढ़ाने का प्रस्ताव किया गया है।

वायदा कारोबार पर एसटीटी को 0.02 प्रतिशत से बढ़ाकर 0.05 प्रतिशत और विकल्प प्रीमियम पर इसे 0.15 प्रतिशत करने का प्रस्ताव है। वित्त मंत्री ने कहा कि यह कदम युवाओं और छोटे निवेशकों को अनावश्यक जोखिम से बचाने के लिए उठाया गया है।

बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के अध्ययन के अनुसार, एफ एंड ओ में 90 प्रतिशत से अधिक खुदरा निवेशकों को नुकसान होता है। वित्त मंत्री ने बताया कि कई अभिभावक अपने बच्चों के भारी नुकसान को लेकर चिंता जताते हैं, इसलिए सरकार ने यह सख्त कदम उठाया है।

राजकोषीय घाटा 4.3 प्रतिशत : सरकार ने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए राजकोषीय घाटा जीडीपी का 4.3 प्रतिशत तय किया है, जबकि चालू वर्ष में यह 4.4 प्रतिशत है। सीतारमण ने कहा कि हर वर्ष आर्थिक स्थिति के अनुसार घाटे का लक्ष्य तय किया जाता है। उन्होंने कहा, 'इस समय हमारी प्राथमिकता विकास है, इसलिए 4.3 प्रतिशत का लक्ष्य संतुलित और व्यावहारिक है।'

विनिवेश और एसेट मोनेटाइजेशन जारी : वित्त मंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि सरकार सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों में विनिवेश और एसेट मोनेटाइजेशन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाती रहेगी। इससे गैर-कर राजस्व बढ़ेगा और सरकार को विकास योजनाओं के लिए अतिरिक्त संसाधन मिलेंगे।

उन्होंने आईडीबीआई बैंक के रणनीतिक विनिवेश को सही दिशा में कदम बताया।

उपभोग बढ़ने से अर्थव्यवस्था को सहारा : सीतारमण ने भरोसा जताया कि जीएसटी दरों में कटौती और आयकर छूट सीमा बढ़ाने से निजी उपभोग में जो वृद्धि हुई है, वह आगे भी जारी रहेगी। इससे बाजार में मांग बढ़ेगी और उद्योगों को मजबूती मिलेगी।

महंगी दवाएं होंगी सस्ती

कैंसर और दुर्लभ बीमारियों की 24 महंगी दवाओं पर सीमा शुल्क हटाने से इलाज सस्ता होने की उम्मीद है। 5 से 10 प्रतिशत तक की आयात शुल्क छूट से दवाओं की लागत घटेगी, जिससे मरीजों को सीधी राहत मिलेगी और उपचार अधिक सुलभ होगा।

इस फैसले से बहुराष्ट्रीय कंपनियों जैसे नोवार्टिस, इलाई लिली, एस्ट्राजेनेका, रोश और एल्नीलम फार्मास्युटिकल्स को लाभ मिलेगा। इन कंपनियों की कई प्रमुख दवाएं अब कम कीमत पर उपलब्ध हो सकेंगी। मरीजों के लिए इसका मतलब है कि लाखों रुपए में होने वाले इलाज पर आर्थिक बोझ कुछ हद तक कम होगा। खासकर कैंसर और दुर्लभ बीमारियों से जूझ रहे लोगों के लिए यह फैसला बड़ी राहत लेकर आएगा और लंबे समय तक इलाज जारी रखना आसान बनेगा।

छात्रों के लिए अच्छी खबर

केंद्रीय बजट 2026 में सरकार ने विदेश में पढ़ाई की तैयारी कर रहे छात्रों और उनके परिवारों को राहत देने वाले कई अहम फैसले किए हैं। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, टीसीएस में कटौती और कस्टम ड्यूटी घटाने से पढ़ाई का खर्च कुछ हद तक कम होगा।

जयपुरिया ग्रुप ऑफ एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस के सीएफओ बिक्रम अग्रवाल के अनुसार, स्टडी इक्विपमेंट पर कस्टम ड्यूटी 20 फीसदी से घटाकर 10 फीसदी होने से सीधी बचत मिलेगी।

वहीं जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट के निदेशक डॉ. प्रभात पंकज का कहना है कि एलआरएस के तहत टीसीएस 5 प्रतिशत से घटाकर 2 प्रतिशत होने से एजुकेशन लोन और ईएमआई का बोझ कम होगा।

सीनियर सिटीजंस को मिली राहत

बजट 2026 में सरकार ने सीनियर सिटीजंस के लिए सीधे भले ही बड़ी घोषणा न की हो, लेकिन टैक्स और हेल्थकेयर से जुड़े कई फैसलों से उन्हें परोक्ष रूप से राहत मिली है। केयर हेल्थ इंश्योरेंस के मनीष डोडेजा के अनुसार, टैक्स प्रक्रिया आसान होने और ऑटोमेशन बढ़ने से बुजुर्गों की आर्थिक व मानसिक चिंता कम होगी। एक्सपर्ट्स मानते हैं कि बजट 2026 में टैक्स सुधार और दवाओं पर छूट से बुजुर्गों का जीवन थोड़ा आसान हुआ है। कुल मिलाकर यह बजट सीनियर सिटीजन्स के लिए 'सहूलियत और भरोसे' का संकेत देता है।

आठवें वेतन आयोग को फंड

बजट 2026 में केंद्र सरकार ने कर्मचारियों और पेंशनर्स के लिए बड़ा कदम उठाया है। सरकार ने आठवां वेतन आयोग के लिए 23.42 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है, जिससे वेतन और पेंशन बढ़ोतरी का रास्ता साफ हो गया है।

इस राशि में 21.32 करोड़ रुपए राजस्व व्यय और 2.10 करोड़ रुपए पूंजीगत खर्च के लिए रखे गए हैं। यह पैसा आयोग के दफ्तर, स्टाफ, रिसर्च और प्रशासनिक कार्यों पर खर्च होगा। सरकारी सूत्रों के अनुसार, आयोग जल्द अपनी रिपोर्ट सौंप सकता है और लगभग 200 दिनों में काम पूरा होने की उम्मीद है। इसके बाद केंद्रीय कर्मचारियों और पेंशनर्स की सैलरी-पेंशन में बढ़ोतरी पर फैसला लिया जाएगा।

हिंदी जानने वाले पानीपुरी बेचते हैं, डीएमके के मंत्री का बयान

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

तमिलनाडु विधानसभा चुनाव से पहले डीएमके मंत्री एमआरके पन्नीरसेल्वम के एक बयान ने राज्य की राजनीति में नया विवाद खड़ा कर दिया है। उन्होंने कहा कि उत्तर भारत से आने वाले लोग केवल हिंदी जानने के कारण तमिलनाडु में पानी पुरी बेचने, टेबल साफ करने और मजदूरी जैसे काम करने को मजबूर होते हैं।

इस टिप्पणी के बाद भाषा, प्रवासी मजदूर और 'हिंदी थोपने' जैसे मुद्दों पर बहस फिर से तेज हो गई है।

एमआरके पन्नीरसेल्वम ने कहा कि तमिलनाडु की दो-भाषा नीति (तमिल और अंग्रेजी) के कारण राज्य के युवाओं को विदेशों में बेहतर अवसर मिलते हैं, जबकि उत्तर भारत के लोग केवल हिंदी जानने के कारण सीमित रोजगार तक ही सिमट जाते हैं।

उन्होंने दावा किया कि तमिल बच्चे अमेरिका और लंदन जैसे देशों में जाकर अच्छा कमा रहे हैं, जबकि उत्तर भारतीय राज्य में छोटे काम करने आते हैं।

मंत्री के इस बयान पर भारतीय जनता पार्टी और अन्य विपक्षी दलों ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। भाजपा ने इसे उत्तर भारतीयों का अपमान बताते हुए कहा कि ऐसे बयान समाज में नफरत फैलाते हैं और प्रवासी मजदूरों के खिलाफ माहौल बनाते हैं।

भाजपा नेताओं ने यह भी सवाल उठाया कि विपक्षी गठबंधन और खासकर राहुल गांधी इस मुद्दे पर चुप क्यों हैं।

विवाद बढ़ने के बाद द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके) के वरिष्ठ नेताओं ने बयान से दूरी बनाने की कोशिश की।

डीएमके सांसद टी. आर. बालू ने कहा कि मंत्री के बयान को गलत तरीके से पेश किया गया है। उन्होंने दोहराया कि पार्टी हमेशा से हिंदी थोपने के खिलाफ रही है और सभी भाषाओं का सम्मान करती है।

इस बयान पर उत्तर भारत के नेताओं ने भी नाराजगी जताई है। समाजवादी पार्टी के सांसद अवधेश प्रसाद ने इसे 'घटिया और अपमानजनक' बताया। उन्होंने कहा कि उत्तर भारत ने देश को कई प्रधानमंत्री दिए हैं और वहां के लोगों का इस तरह अपमान करना गलत है।

बिहार : गांव बनेंगे 'बिजनेस हब'

जन जन विचार
...✍ पटना

बिहार सरकार ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और गांवों में रोजगार बढ़ाने के लिए बड़ी पहल की है। राज्य के सभी जिलों में ग्रामीण हाटों का विकास किया जाएगा, जहां किसानों, कारीगरों और छोटे उद्यमियों को अपने उत्पाद बेचने का सीधा अवसर मिलेगा। इससे लाखों परिवारों की आय बढ़ने की उम्मीद है।

सरकार के इस कदम से सब्जी, फल, अनाज, मखाना, शहद, लीची, आम, हस्तशिल्प सहित स्थानीय उत्पादों को स्थायी बाजार मिलेगा। कृषि, पंचायत राज और ग्रामीण विकास विभाग मिलकर योजना को जमीन पर उतारेंगे।

वित्तीय वर्ष 2026-27 के बजट में ग्रामीण विकास के लिए लगभग सात हजार करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। इस राशि से ग्रामीण हाटों के निर्माण, आधुनिकीकरण और संचालन की व्यवस्था की जाएगी।

सरकार की महिला रोजगार योजना के तहत महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। बीते वर्ष इस योजना पर 27 हजार करोड़ रुपए से अधिक खर्च किए गए। वहीं युवाओं के लिए भी स्थानीय स्तर पर नए अवसर पैदा होंगे।

ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापार और रोजगार बढ़ने से शहरों की ओर पलायन कम होगा। गांवों में ही काम और आमदनी मिलने से ग्रामीण जीवन स्तर में सुधार आएगा।

विधानसभा में सरकार की ओर से कहा गया कि ग्रामीण हाट योजना बिहार को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में बड़ा कदम है। इससे गांवों की आर्थिक रीढ़ मजबूत होगी और स्थानीय उत्पादों को नई पहचान मिलेगी।

यूपी में चाइनीज मांझे पर योगी सख्त

जन जन विचार
...✍ लखनऊ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने चाइनीज मांझे से होने वाली घटनाओं पर कड़ा रुख अपनाया है। उन्होंने पूरे राज्य में इस पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने और अवैध बिक्री के खिलाफ सख्त अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं।

मुख्यमंत्री ने साफ कहा है कि चाइनीज मांझे से किसी की मौत होने पर उसे हत्या माना जाएगा और उसी आधार पर केस दर्ज किया जाएगा।

यह फैसला लखनऊ में युवक मोहम्मद शोएब की दर्दनाक मौत के बाद लिया गया है, जहां बाइक चलाते समय मांझा गर्दन में फंसने से उनकी जान चली गई।

जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिला में ऑपरेशन त्राशी-1 के तहत जारी सघन तलाशी अभियान के दौरान मुस्तैदी से पहरा देता एक सुरक्षा जवान।

पत्थर हमारी विरासत और भविष्य

इंडिया स्टोनमार्ट 2026 का उद्घाटन कर बोले भजनलाल शर्मा

जन जन विचार
...✍ जयपुर

राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जयपुर स्थित जेईसीसी, सीतापुरा में इंडिया स्टोनमार्ट 2026 का विधिवत उद्घाटन किया। इस चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आयोजन का समापन 8 फरवरी को होगा।

उद्घाटन समारोह में उद्योग मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़, शिक्षा मंत्री मदन दिलावर सहित कई वरिष्ठ अधिकारी और उद्योग जगत के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इंडिया स्टोनमार्ट केवल व्यापार का मंच नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, शिल्प और औद्योगिक शक्ति का संगम है। उन्होंने बताया कि राजस्थान में 85 प्रकार के खनिज पाए जाते हैं और यहां के पत्थरों का उपयोग राष्ट्रपति भवन, संसद और सुप्रीम कोर्ट जैसे प्रतिष्ठित भवनों में हुआ है। उन्होंने एमएसएमई, श्रमिक सम्मान और स्किल डेवलपमेंट पर जोर देते हुए कहा कि सरकार उद्योगों को हरसंभव सहयोग देगी।

उद्योग मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा कि राजस्थान में इतिहास लिखने की जरूरत नहीं, यहां पत्थर खुद बोलते हैं। उन्होंने बताया कि इस बार ईरान, इटली, तुर्की और चीन समेत 66 अंतर्राष्ट्रीय कंपनियां आयोजन में शामिल हुई हैं।

इस अवसर पर आरयूडी द्वारा आयोजित शिल्पग्राम भी आकर्षण का केंद्र रहा, जहां प्रदेश के कारीगरों ने अपनी पारंपरिक कला का प्रदर्शन किया।

तीन बहनों की मौत की कहानी पिता की जुबानी

जन जन विचार
...✍ गाजियाबाद

उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में तीन सगी बहनों की आत्महत्या की घटना ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। तीनों नाबालिग बहनों ने 9वीं मंजिल से कूदकर जान दे दी थी। अब उनके पिता ने उस दिन की पूरी कहानी साझा की है। पिता के अनुसार, उनकी बेटियां पिछले तीन साल से कोरियन ड्रामा और गेम्स की लत में डूबी हुई थीं। वे रात-रात भर मोबाइल चलाती थीं, खाना कम करती थीं और स्कूल जाने में भी रुचि नहीं दिखाती थीं। उनका कहना था कि बेटियां बार-बार 'कोरिया, कोरिया' की बात करती रहती थीं।

उन्होंने बताया कि घटना वाले दिन उन्होंने बेटियों से मोबाइल फोन छीन लिया था, क्योंकि उनकी आंखें सूज गई थीं। इसके बाद बच्चियों ने सोने का नाटक किया और देर रात एक कमरे में चली गईं। पिता ने बताया कि जब उनकी पत्नी ने बेटियों को आवाज दी, तो दरवाजा अंदर से बंद था। बाद में पुलिस ने दरवाजा तोड़ा। तभी नीचे गिरने की आवाज आई और खिड़की से देखने पर एक बच्ची नीचे पड़ी मिली। इसके बाद पूरे परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।

पिता के अनुसार, कमरे की दीवारों पर कोरियन चिह्न और गेम से जुड़े निशान बने हुए थे। बच्चियां अपने नाम तक बदल चुकी थीं और खुद को भारतीय कहे जाने पर रोने लगती थीं। वे हमेशा एक-दूसरे के साथ रहती थीं और बाहर जाना भी पसंद नहीं करती थीं। पिता ने साफ कहा कि परिवार पर कर्ज जरूर है, लेकिन आर्थिक स्थिति इतनी खराब नहीं थी कि बच्चियां ऐसा कदम उठाएं। उन्होंने कहा कि असली वजह मोबाइल और ऑनलाइन कंटेंट की लत थी।

पिता ने माना कि बच्चों पर पर्याप्त ध्यान न दे पाना उनकी गलती रही। उन्होंने सभी अभिभावकों से अपील की कि वे अपने बच्चों की गतिविधियों पर नजर रखें और समय पर उनसे बात करें। उन्होंने कहा, 'अगर मुझे पहले पता होता, तो मैं उन्हें मनोचिकित्सक को दिखाता। मेरी सबसे बड़ी गलती उन्हें फोन देना थी।' यह घटना सिर्फ एक परिवार की नहीं, बल्कि समाज के लिए चेतावनी है। बच्चों में मोबाइल, सोशल मीडिया और ऑनलाइन कंटेंट की बढ़ती लत मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर असर डाल सकती है। समय पर संवाद, निगरानी और भावनात्मक सहयोग ही ऐसे हादसों को रोक सकता है।

अमेरिका से ट्रेड डील : ट्रंप ने नहीं खोले पत्ते

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर लगाए गए टैरिफ में कटौती का एलान किया है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'ट्रुथ सोशल' पर पोस्ट कर भारत-अमेरिका ट्रेड डील पर सहमति बनने की बात कही।

इस घोषणा के बाद भारतीय बाजारों में सकारात्मक माहौल देखने को मिला। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी ट्रंप से बातचीत के बाद सोशल मीडिया पर खुशी जताई और इसे दोनों देशों के लिए लाभकारी बताया।

हाल के वर्षों में भारत ने यह स्पष्ट किया है कि वह किसी एक देश पर निर्भर नहीं रहना चाहता। चीन, रूस और यूरोपीय संघ के साथ बढ़ते संबंधों ने भारत की बहुपक्षीय नीति को मजबूत किया है। यही कारण है कि अमेरिका भी यह समझ गया कि भारत दबाव में आकर अपने हितों से समझौता नहीं करेगा।

ट्रंप ने कहा कि भारत अमेरिका से 500 अरब डॉलर से अधिक की खरीद करेगा। हालांकि वर्तमान में भारत का अमेरिकी आयात 50 अरब डॉलर से भी कम है। विशेषज्ञों के अनुसार, इस लक्ष्य तक पहुंचने में 15-20 साल लग सकते हैं। इसलिए यह दावा तत्काल वादा कम और दीर्घकालिक लक्ष्य अधिक लगता है।

जब तक समझौते का लिखित मसौदा सामने नहीं आता, तब तक इसे राजनीतिक संकेत के रूप में ही देखा जाना चाहिए।

भारत ने अपनी आर्थिक मजबूती और कूटनीतिक संतुलन से यह साबित किया है कि वह वैश्विक मंच पर आत्मनिर्भर होकर फैसले ले सकता है। हालांकि, ट्रंप के एलान को लेकर जल्दबाजी में जश्न मनाने से पहले सभी पहलुओं की स्पष्टता जरूरी है।

ट्रेड डील की टाइमलाइन

2 अप्रैल 2025 : भारत पर 25 प्रतिशत टैरिफ
27 अगस्त 2025 : दोबारा 25 प्रतिशत टैरिफ
3 फरवरी 2026, (रात 9.16 बजे) : मोदी-ट्रंप फोन वार्ता
रात 10.28 बजे : ट्रंप का टैरिफ कट का एलान
रात 11.02 बजे : प्रधानमंत्री मोदी की पुष्टि

ट्रंप के अस्पष्ट दावे

कौन-से उत्पादों पर टैरिफ शून्य होगा, यह स्पष्ट नहीं
भारत अमेरिका से 500 अरब डॉलर से अधिक की खरीद करेगा
भारत रूस से तेल नहीं खरीदेगा
कृषि और जीएम उत्पादों जैसे संवेदनशील क्षेत्रों पर भारत का रुख सख्त है

व्यापार की स्थिति

कुल व्यापार
लगभग 12 लाख करोड़
भारत का निर्यात
7.91 लाख करोड़
आयात
4.17 लाख करोड़
टैरिफ बढ़ने से लेदर, टेक्सटाइल्स और जेम्स-ज्वेलरी जैसे श्रम-प्रधान क्षेत्रों को भारी नुकसान हुआ था।

भारत बना दुनिया का नया भरोसेमंद साझीदार

बारह महीने में 5 ट्रेड डील

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

भारत के आर्थिक इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है, जब मात्र एक वर्ष के भीतर देश ने पांच बड़े व्यापार समझौते कर वैश्विक मंच पर अपनी मजबूत मौजूदगी दर्ज कराई है। आज दुनिया के बड़े-बड़े देश भारत के साथ कारोबार करने को उत्सुक नजर आ रहे हैं।

ताजा और सबसे अहम समझौता अमेरिका के साथ हुआ है। अमेरिका इस समय भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझीदार है। वित्त वर्ष 2025 में भारत के कुल निर्यात का करीब 20 प्रतिशत हिस्सा अमेरिका गया, जबकि आयात में उसकी भागीदारी 6.3 प्रतिशत रही।

वर्ष 2014 से अब तक भारत आठ प्रमुख व्यापार समझौतों को अंतिम रूप दे चुका है। इन देशों की संयुक्त जीडीपी विश्व की कुल जीडीपी का 50 प्रतिशत से अधिक है। यह भारत की बढ़ती आर्थिक ताकत का साफ संकेत है।

सरकार ने बीते वर्षों में 37 विकसित देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते किए हैं। इसके अलावा चिली, पेरू और कनाडा जैसे देशों के साथ भी बातचीत अंतिम चरण में है। खाड़ी सहयोग परिषद के देश भी भारत के साथ एफटीए को आगे बढ़ाने में रुचि दिखा रहे हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार, भारत की मजबूत आर्थिक वृद्धि दर, स्थिर राजनीतिक माहौल और विशाल उपभोक्ता बाजार उसे वैश्विक कंपनियों के लिए आकर्षक बनाते हैं। 140 करोड़ की आबादी, बढ़ता मध्यम वर्ग, युवा शक्ति और डिजिटल क्रांति भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जा रही है।

चीन के विकल्प की तलाश में जुटी बहुराष्ट्रीय कंपनियां अब भारत को सुरक्षित और लाभदायक गंतव्य मान रही हैं। सरकार की पीएलआई योजना ने इस भरोसे को और मजबूत किया है।

आर्थिक जानकारों का मानना है कि आने वाले समय में भारत को और भी बड़े व्यापारिक अवसर मिलेंगे। नए समझौतों से न सिर्फ निर्यात बढ़ेगा, बल्कि निवेश और रोजगार के नए रास्ते भी खुलेंगे। आज भारत केवल एक उभरती अर्थव्यवस्था नहीं, बल्कि वैश्विक व्यापार का मजबूत स्तंभ बनता जा रहा है।

ईरानी महिलाओं को मिली बाइक चलाने की आजादी

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

ईरान की सरकार ने महिलाओं के लिए एक बड़ा और अहम फैसला लिया गया है। स्थानीय मीडिया के अनुसार, ईरान की महिलाओं को कानूनी रूप से मोटरसाइकिल चलाने की अनुमति मिल गई है।

दरअसल, ईरानी कानून के मुताबिक, वहां की महिलाओं को मोटरसाइकिल या स्कूटर चलाने पर साफ रोक नहीं थी, लेकिन फिर भी प्रशासन की ओर से उन्हें लाइसेंस नहीं दिया जाता था। नए नियम के तहत महिलाओं को लाइसेंस जारी करने की अनुमति मिल गई है।

ईरान की समाचार एजेंसी इलना के अनुसार, उपराष्ट्रपति मोहम्मद रजा आरिफ ने यातायात संहिता को स्पष्ट करने के उद्देश्य से एक प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किए, जिसे ईरान के मंत्रिमंडल ने जनवरी के अंत में मंजूरी दी थी। इसके तहत दोपहिया वाहनों से संबंधित वर्षों से चली आ रही कानूनी अस्पष्टता समाप्त हो गई है।

बता दें कि अब तक ईरान में अगर सड़क हादसे में कोई महिला घायल होती थी, तब भी कई बार उसे ही दोषी मान लिया जाता था, क्योंकि उसके पास लाइसेंस नहीं होता था। अब सरकार के नए फैसले से इस समस्या का समाधान होने की उम्मीद है।

बांग्लादेश में भारतीय सीमा के पास ड्रोन की फैक्ट्री लगाने जा रहा चीन

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

बांग्लादेश ने चीन के साथ मिलकर ड्रोन फैक्ट्री लगाने का बड़ा सौदा किया है। ये सौदा ऐसे वक्त पर हो रहा है जब भारत और बांग्लादेश के रिश्ते में तनाव की लकीरें गहरी होती जा रही हैं।

बांग्लादेश और चीन के बीच ये सौदा भारत को असहज करने वाला है। यह समझौता सिर्फ ड्रोन खरीदने का नहीं, बल्कि उन्नत ड्रोन बनाने, असेंबल करने और भविष्य में खुद डिजाइन करने की तकनीक ट्रांसफर का है।

यह डील बांग्लादेश एयर फोर्स (बीएएफ) और चीन की स्टेट-ओन्ड कंपनी चीन इलेक्ट्रॉनिक्स टेक्नोलॉजी ग्रुप कॉर्पोरेशन (सीईटीसी) के बीच गवर्नमेंट-टू-गवर्नमेंट (जी2जी) आधार पर हुई है। इस डील के तहत, फैक्ट्री बांग्लादेश के बोगरा इलाके में लगेगी। इसमें 2026 के अंत तक काम शुरू हो जाएगा। बांग्लादेश सरकार का कहना है कि ये ड्रोन मुख्य रूप से मानवीय सहायता, आपदा प्रबंधन और सैन्य जरूरतों के लिए होंगे।

लेकिन भारत इसे भूराजनीतिक खतरे के तौर पर देख रही हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि यह जगह भारत की संवेदनशील उत्तरी सीमा और सिलीगुड़ी कॉरिडोर (चिकन नेक) के बहुत करीब है।

बांग्लादेश और चीन के बीच 27 जनवरी 2026 को ढाका कैंटनमेंट में ड्रोन डील साइन हुआ। इसमें सीईटीसी पूरी तकनीक ट्रांसफर करेगी।

'आई क्यू' नहीं 'ई क्यू' से बनेगा बेहतर समाज

जन जन विचार
...✍ रामेश्वर शर्मा

आज का समाज एक गंभीर प्रश्न से जूझ रहा है- बढ़ती हिंसा, आक्रामकता, असहिष्णुता और संवेदनहीनता। घर हो, स्कूल हो या समाज- हर जगह गुस्सा, जल्दबाजी और टकराव बढ़ रहा है। कानून सख्त होते जा रहे हैं, सजाएं बढ़ रही हैं, लेकिन समस्याएं कम नहीं हो रहीं।

तो सवाल है- आखिर गलती कहां है?

विशेषज्ञों और सामाजिक अध्ययनों के अनुसार, इन समस्याओं की जड़ अपराध या जवानी में नहीं, बल्कि बचपन में छिपी होती है। 3 से 13 वर्ष की आयु वह समय होता है, जब बच्चे का मन, भावनाएं और दृष्टि आकार लेती हैं। यही वह दौर है, जब संवेदनशीलता सिखाई जाए तो जीवनभर साथ रहती है। दुर्भाग्य यह है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली भाषा, गणित और अंकतालिका तक सीमित हो गई है। बुद्धि (आईक्यू) पर जोर है, पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईक्यू) उपेक्षित है।

जब बच्चे को केवल पढ़ाया जाता है, पर महसूस करना नहीं सिखाया जाता तो वही बच्चा आगे चलकर कठोर और असंवेदनशील बन जाता है। सच्चाई यह है कि हिंसा का मूल कारण गुस्सा नहीं, करुणा की कमी है।

सहानुभूति या संवेदना (इम्पैथी) भाषण से नहीं आती, वह अनुभव से जन्म लेती है। इसी सोच के आधार पर प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) में 'देखभाल-आधारित शिक्षण' को अनिवार्य बनाने का प्रस्ताव सामने आया है। इस प्रस्ताव के अनुसार, हर बच्चे को वर्ष में कम से कम 100 दिन, प्रतिदिन 15 मिनट देखभाल आधारित गतिविधियों से जोड़ा जाए। जैसे- पशु-पक्षियों को दाना-पानी देना, पौधों की देखभाल, घायल या कमजोर जीवों की सहायता, पर्यावरण की रक्षा।

इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चा सीखता है-दूसरों का दर्द समझना, जिम्मेदारी निभाना और धैर्य रखना। यह शिक्षा किताबों में नहीं मिलती, यह जीवन से मिलती है। इस मॉडल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके लिए न तो भारी बजट चाहिए, न नई इमारतें।

आंगनवाड़ी, प्राथमिक विद्यालय और परिवार तीनों मिलकर इसे रोजमर्रा की दिनचर्या में शामिल कर सकते हैं।

शिक्षक और माता-पिता केवल मार्गदर्शक होंगे, बच्चा स्वयं अनुभव करेगा। इसके दूरगामी परिणाम होंगे- बच्चों में करुणा, संयम और आत्मनियंत्रण विकसित होगा।

भविष्य में घरेलू हिंसा, सामाजिक अपराध और असहिष्णुता में कमी आएगी। समाज को संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक मिलेंगे। साफ है कि अगर हमें अपराधमुक्त और संस्कारयुक्त समाज चाहिए, तो शुरुआत जेल से नहीं, झूले से करनी होगी।

कानून डर पैदा कर सकता है, पर संस्कार चरित्र बनाते हैं। आज समय आ गया है कि ईसीसी में इम्पैथी विकास को एक वैकल्पिक गतिविधि नहीं, बल्कि अनिवार्य आधार बनाया जाए। क्योंकि संवेदनशील बचपन ही सशक्त राष्ट्र की नींव है।

मैट्रिक और हायर सेकेंडरी परीक्षा

असम में होने वाली एचएसएलसी और और उच्च माध्यमिक (एचएस) परीक्षाओं को लेकर राज्य सरकार और असम राज्य स्कूल शिक्षा बोर्ड ने कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की है। इस वर्ष लगभग 7.6 लाख छात्र परीक्षाओं में शामिल होंगे।

मुख्य तैयारियां

- -उड़नदस्ते द्वारा औचक निरीक्षण
- -परीक्षा केंद्रों पर सख्त निगरानी
- -छात्रों की अनिवार्य तलाशी
- - जिला और राज्य स्तर पर कंट्रोल रूम
- - संवेदनशील केंद्रों पर अतिरिक्त सुरक्षा

परीक्षा कार्यक्रम

एचएसएलसी : 10 फरवरी से 27 फरवरी
केंद्र : 1046 (अब तक सबसे अधिक)
एचएस परीक्षा : 11 फरवरी से 16 मार्च
केंद्र : 821 **मूल्यांकन क्षेत्र** : 48

राज्य सरकार, शिक्षा विभाग और पुलिस के संयुक्त प्रयास से यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि परीक्षाएं शांतिपूर्ण, पारदर्शी और बिना नकल के संपन्न हों। प्रशासन का लक्ष्य है कि सभी छात्र सुरक्षित और निष्पक्ष माहौल में परीक्षा दे सकें।

सख्त नियम

मोबाइल फोन पूरी तरह प्रतिबंधित
केंद्र में प्रवेश से पहले तलाशी
केवल सरकारी स्कूलों के शिक्षक ही निरीक्षक
विषय शिक्षक अपनी परीक्षा के दिन ड्यूटी पर नहीं होंगे
प्रश्नपत्र और ओएमआर शीट की सुरक्षा पर विशेष ध्यान

परीक्षार्थियों की संख्या

एचएसएलसी : 4,38,565 छात्र **एचएस :** 3,30,744 छात्र

एचएसएलसी के 194 केंद्रों को संवेदनशील और अति-संवेदनशील घोषित किया गया है, जहां अतिरिक्त निगरानी की जाएगी।

डाक विभाग में 28,740 पदों पर भर्ती

भारतीय डाक विभाग ने ग्रामीण डाक सेवक भर्ती 2026 के लिए अधिसूचना जारी कर दी है। इस भर्ती के तहत देशभर में कुल 28,740 पदों पर नियुक्ति की जाएगी। इसमें ब्रांच पोस्टमास्टर, असिस्टेंट ब्रांच पोस्टमास्टर सहित अन्य पद शामिल हैं।

राज्यों के अनुसार पदों की बात करें तो उत्तर प्रदेश में 3,169, बिहार में 1,347, असम में 639 सहित विभिन्न राज्यों में हजारों पद निर्धारित किए गए हैं।

आवेदन प्रक्रिया 31 जनवरी 2026 से शुरू हो चुकी है। आवेदन की अंतिम तिथि 14 फरवरी 2026 है, जबकि शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि 16 फरवरी 2026 निर्धारित की गई है। चयन पूरी तरह 10वीं के अंकों के आधार पर मेरिट लिस्ट से होगा, इसमें कोई लिखित परीक्षा नहीं होगी।

उम्मीदवारों की आयु सीमा 18 से 40 वर्ष तय की गई है। इच्छुक अभ्यर्थी आधिकारिक वेबसाइट indiapostgdsonline.gov.in पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

यूपीएससी सीएसई का नोटिस जारी

933 पदों पर 24 फरवरी तक करें आवेदन

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) ने सिविल सेवा परीक्षा 2026 की अधिसूचना जारी कर दी है। आधिकारिक परीक्षा सूचना (संख्या 05/2026-सीएसई) 4 फरवरी को जारी की गई। कुल 933 पदों के लिए पंजीकरण प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।

इच्छुक एवं योग्य उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से अपना आवेदन पत्र भरकर जमा कर सकते हैं। आवेदन पत्र जमा करने करने की अंतिम तिथि 24 फरवरी, 2026 निर्धारित की गई है।

यूपीएससी सीएसई 2026 की महत्वपूर्ण तिथियां

इच्छुक उम्मीदवारों को निम्नलिखित समयसीमाओं को अपने कैलेंडर में अंकित कर लेना चाहिए-

अधिसूचना जारी होने की तिथि : 4 फरवरी, 2026
ऑनलाइन आवेदन शुरू होने की तिथि : 4 फरवरी, 2026
ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि : 24 फरवरी, 2026 (शाम 6.00 बजे तक)
प्रारंभिक परीक्षा की तिथि : 24 मई, 2026

रिक्तियों का विवरण

सीएसई 2026 चक्र के माध्यम से 933 प्रतिष्ठित प्रशासनिक पद भरे जाएंगे। इसमें बेंचमार्क विकलांगता वाले व्यक्तियों (पीडब्ल्यूबीडी) श्रेणियों के लिए आरक्षित 33 रिक्तियां शामिल हैं।

सफलता का मंत्र

मेहनत कभी बेकार नहीं जाती, वह या तो सफलता देती है या अनुभव।

जो छात्र आज ईमानदारी से पढ़ाई करता है, वही कल आत्मविश्वास से भरा इंसान बनता है।

याद रखें : हार सिर्फ तब होती है, जब हम कोशिश करना छोड़ देते हैं।

परीक्षा हॉल में करें इन बातों को रखें ध्यान

समय से पहले पहुंचें : परीक्षा केंद्र पर कम से कम 30 मिनट पहले पहुंचें।
जरूरी सामान साथ रखें : प्रवेश पत्र, पेन, पेंसिल, स्केल आदि पहले से तैयार रखें।
घबराएं नहीं : सीट पर बैठकर गहरी सांस लें और मन को शांत रखें।
प्रश्न पत्र ध्यान से पढ़ें : शुरू करने से पहले पूरे प्रश्न पत्र को समझ लें।
आसान प्रश्न पहले करें : पहले वे प्रश्न हल करें जो अच्छे से आते हों।
समय का सही उपयोग करें : हर प्रश्न के लिए समय बांटकर चलें।
साफ और सुंदर लिखें : स्पष्ट, साफ और सही शब्दों में उत्तर लिखें।
निगरानी नियमों का पालन करें : निरीक्षक के निर्देश ध्यान से मानें।
उत्तर जांचें : अंत में 5-10 मिनट उत्तर पुस्तिका जरूर देखें।
आत्मविश्वास बनाए रखें : खुद पर भरोसा रखें-यही सबसे बड़ी ताकत है।

पिछले अंक में दिए गए समाज विज्ञान विषय के बहु वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर-

16. B, 17. B, 18. C, 19. C, 20 C, 21. B, 22. B, 23. B, 24. B, 25. B, 26. B, 27. B, 28. C, 29. A, 30. B, 31. B, 32. B , 33 B, 34. B, 35. C, 36. B, 37. A, 38. B, 39. C, 40. B, 41 B, 42. B, 43. B, 44. B, 45. B

टी 20 : बादशाहत बरकरार रखेगी टीम इंडिया

जन जन विचार
...✍ स्पोर्ट्स डेस्क

टी-20 विश्व कप से पहले भारतीय टीम ने जिस तरह का प्रदर्शन किया है, उसने विरोधी टीमों में डर और भारतीय प्रशंसकों में उम्मीद दोनों जगा दी हैं। हालिया मुकाबलों में लगातार जीत दर्ज कर भारत ने यह साबित कर दिया है कि वह टी-20 विश्व कप 2026 के लिए पूरी तरह तैयार है। 2024 के बाद से टीम इंडिया का विजय रथ लगातार आगे बढ़ता रहा है।

एशिया कप में अपराजेय प्रदर्शन हो या ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड जैसी मजबूत टीमों पर जीत-भारत ने हर मोर्चे पर खुद को साबित किया है।

कप्तानी और कोचिंग का मजबूत तालमेल : कप्तान सूर्य कुमार यादव और कोच गौतम गंभीर की जोड़ी टीम की नई पहचान बन चुकी है। दोनों ने खिलाड़ियों में आत्मविश्वास भरा है और आक्रामक क्रिकेट को नई दिशा दी है। हालांकि, विशेषज्ञ मानते हैं कि लगातार सफलता कभी-कभी आत्मसंतोष को जन्म देती है, जो बड़े टूर्नामेंट में नुकसानदायक साबित हो सकता है।

अभ्यास मैच में भी दिखा भारत का दबदबा : दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अभ्यास मैच में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 240 रन बनाए और फिर विपक्षी टीम को 210 रन पर रोक दिया। खास बात यह रही कि यह प्रदर्शन बिना जसप्रीत बुमरा के हुआ। इससे साफ है कि टीम के पास विकल्पों की कमी नहीं है और हर खिलाड़ी जिम्मेदारी निभाने को तैयार है।

इशान किशन और तिलक वर्मा की चमक : ओपनिंग में इशान किशन और तिलक वर्मा की जोड़ी ने शानदार शुरुआत दी।

इशान की 20 गेंदों में 53 रन की पारी ने चयनकर्ताओं और टीम प्रबंधन का भरोसा और मजबूत किया।

वहीं वापसी करने वाले तिलक वर्मा ने भी अपनी उपयोगिता साबित की और मध्यक्रम को मजबूती दी।

हार्दिक पंड्या : टीम की धुरी

ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या इस टीम की सबसे अहम कड़ी हैं। उनकी तेज बल्लेबाजी और 140 किमी प्रति घंटे की गेंदबाजी भारत को संतुलन देती है।

हालांकि, उनकी फिटनेस चिंता का विषय बनी हुई है। टीम प्रबंधन को उम्मीद है कि वह पूरे टूर्नामेंट में फिट रहेंगे।

ओस और दबाव से निपटने की तैयारी : विश्व कप में ओस एक बड़ा फैक्टर बन सकती है। इसी कारण सूर्या ने कुछ मैचों में पहले बल्लेबाजी का फैसला किया, ताकि टीम कठिन परिस्थितियों में खेलने की आदत डाल सके।

यह प्रयोग भविष्य में नॉकआउट मुकाबलों में भारत के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है।

चयन में बदलाव के संकेत : हालिया प्रदर्शन से यह भी साफ हुआ है कि

-वरुण चक्रवर्ती, कुलदीप यादव से आगे निकलते दिख रहे हैं

-इशान किशन ने संजू सैमसन की जगह मजबूत की है

-छठे गेंदबाज के विकल्प पर टीम को नई उम्मीद मिली है

ये सभी संकेत बताते हैं कि टीम अब 'बेस्ट कॉम्बिनेशन' के करीब पहुंच चुकी है।

तैयार भारत, लेकिन सतर्कता जरूरी

विश्व कप से पहले टीम इंडिया हर पैमाने पर मजबूत दिख रही है-बल्लेबाजी में गहराई, गेंदबाजी में विविधता और नेतृत्व में आत्मविश्वास। लेकिन असली परीक्षा नॉकआउट मुकाबलों में होगी, जहां एक गलती पूरे सपने को तोड़ सकती है। आज भारत के पास जीतने का दम है, रणनीति है और अनुभव भी। अब जरूरत है-संयम, निरंतरता और दबाव में सही फैसलों की।

अगर ये तीनों साथ रहे, तो 2026 का विश्व कप भारत के लिए स्वर्णिम इतिहास बन सकता है।

कप्तानी और कोचिंग का मजबूत तालमेल : गंभीर और सूर्य कुमार की जोड़ी कमाल करेगी

हार्दिक पंड्या के कंधों पर बड़ी जिम्मेदारी

बुधवार को अभ्यास मैच में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ इशान किशन ने अभिषेक शर्मा के साथ पारी की शुरुआत की।

भारत का बहिष्कार पड़ेगा भारी

- 15 फरवरी को भारत-पाक मैच प्रस्तावित है। पाकिस्तान के इनकार से आईसीसी दंड लगा सकता है।
- 2024-27 के वित्तीय चक्र में पाकिस्तान को लगभग 144 मिलियन डॉलर मिलने हैं। दंड लगने पर यह राशि रोकी जा सकती है।
- इससे पाकिस्तान क्रिकेट को गंभीर वित्तीय संकट हो सकता है।
- विशेषज्ञों के अनुसार, यदि पाकिस्तान अपने फैसले पर कायम रहा, तो उसे करोड़ों का नुकसान उठाना पड़ सकता है।

टी 20 विश्व कप 2026 : भारत के ग्रुप स्टेज मैच

तारीख	मैच	स्थान	समय
7 फरवरी	भारत/अमेरिका	वानखेड़े स्टेडियम, मुंबई	शाम 7.00 बजे
12 फरवरी	भारत/नामीबिया	अरुण जेटली स्टेडियम, दिल्ली	शाम 7.00 बजे
15 फरवरी	भारत/पाकिस्तान	सिहंलीज स्पोर्ट्स क्लब, कोलंबो	शाम 7.00 बजे
18 फरवरी	भारत/नीदरलैंड्स	नरेंद्र मोदी स्टेडियम, अहमदाबाद	शाम 7.00 बजे

भारत के साथ खेलने के लिए पाक ने रखी शर्त

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

भारत के खिलाफ टी20 वर्ल्ड कप 2026 में होने वाले मुकाबले को लेकर पाकिस्तान ने बायकॉट करने का फैसला किया है। पाकिस्तानी सरकार ने बांग्लादेश का समर्थन करने के लिए ऐसा कदम उठाया है। भारत-पाकिस्तान का ये मैच श्रीलंका के कोलंबों में 15 फरवरी को होना और पाकिस्तान ने इस मुकाबले में नहीं खेलने का फैसला किया है। ऐसे में अब पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के पूर्व चेयरमैन नजम सेठी ने इसको लेकर बड़ा बयान दिया है। सेठी का मानना है कि पाकिस्तान के द्वारा लिए गए फैसले को अभी भी सुधारा जा सकता है और पाकिस्तान भारत के खिलाफ मैच खेल सकता है। बता दें कि बांग्लादेश ने भारत में टी20 वर्ल्ड कप 2026 में खेलने से इनकार कर दिया था, जिसके बाद आईसीसी ने उन्हें टूर्नामेंट से बाहर का रास्ता दिखा दिया था। बांग्लादेश की जगह आईसीसी ने टूर्नामेंट में स्कॉटलैंड को शामिल कर लिया। पाकिस्तान इसे गलत बता रहा है और इसी वजह से भारत के खिलाफ मुकाबला खेलने से इनकार कर दिया है। पीसीबी के पूर्व चेयरमैन ने कहा, 'बांग्लादेश को श्रीलंका में खेलने के लिए बुलाया जा सकता है और मुझे ऐसा लगता है कि इसमें अधिक देर नहीं हुई है। वहां पर कई मैच खेले जा रहे हैं। बांग्लादेश अगर अब भाग लेने से इनकार करता है, तो उन्हें किसी भी तरह से मनाना चाहिए।

वैलेंटाइन डे : प्यार का दिन या बाजार का उत्सव?

हर साल 14 फरवरी को दुनिया भर में वैलेंटाइन डे मनाया जाता है। यह दिन प्रेम, अपनापन और रिश्तों की गर्माहट का प्रतीक माना जाता है। युवा हाथों में गुलाब, चॉकलेट और कार्ड लेकर अपने जज़्बात ज़ाहिर करते हैं। सोशल मीडिया पर प्यार के इज़हार की बाढ़ आ जाती है। लेकिन सवाल यह है कि क्या आज वैलेंटाइन डे सिर्फ़ प्यार का दिन रह गया है, या यह बाज़ार का बड़ा उत्सव बन चुका है?

वैलेंटाइन डे की मूल भावना प्रेम, सम्मान और विश्वास पर आधारित है। यह दिन हमें अपने प्रियजनों के प्रति आभार व्यक्त करने और रिश्तों को मजबूत बनाने का अवसर देता है। सच्चा प्रेम केवल उपहारों तक सीमित नहीं होता, बल्कि वह समझ, त्याग और जिम्मेदारी से जुड़ा होता है।

आज के दौर में हालांकि वैलेंटाइन डे का स्वरूप काफी बदल गया है। महंगे तोहफे, होटल पार्टियां और सोशल मीडिया पोस्ट इस दिन की पहचान बन गए हैं। कई बार युवाओं पर यह दबाव भी बन जाता है कि अगर उन्होंने कुछ खास नहीं किया, तो उनका प्यार अधूरा माना जाएगा। यह सोच रिश्तों की सच्चाई को कमजोर करती है।

भारतीय समाज में प्रेम का अर्थ हमेशा से गहरा और संवेदनशील रहा है। हमारे यहां प्रेम सिर्फ प्रेमी-प्रेमिका तक सीमित नहीं, बल्कि माता-पिता, गुरु, मित्र और समाज से भी जुड़ा होता है। ऐसे में वैलेंटाइन डे को केवल रोमांस तक सीमित करना हमारी संस्कृति के व्यापक दृष्टिकोण को कमज़ोर करता है।

असल जरूरत इस बात की है कि हम इस दिन को दिखावे के बजाय भावना से जोड़ें। अपने माता-पिता के प्रति सम्मान जताना, किसी मित्र की मदद करना, किसी जरूरतमंद के चेहरे पर मुस्कान लाना — यही सच्चा वैलेंटाइन है। प्यार का मतलब सिर्फ कहना नहीं, निभाना भी होता है।

वैलेंटाइन डे हमें याद दिलाता है कि जीवन में प्रेम सबसे बड़ी ताकत है। लेकिन यह प्रेम एक दिन का नहीं, बल्कि हर दिन जीने वाला होना चाहिए। जब रिश्तों में विश्वास, ईमानदारी और सम्मान होगा, तभी समाज मजबूत बनेगा।

अंततः, वैलेंटाइन डे तभी सार्थक होगा, जब हम इसे बाज़ार के दबाव से निकालकर दिल की सच्ची भावनाओं से जोड़ें। क्योंकि सच्चा प्यार न महंगे तोहफों का मोहताज होता है, न ही दिखावे का — वह तो बस दिल से दिल तक पहुंचने की भाषा है।

वैलेंटाइन वीक

सात दिन, सात एहसास एक ही नाम - प्यार

हर साल फरवरी के दूसरे सप्ताह में मनाया जाने वाला वैलेंटाइन वीक युवाओं के बीच खासा लोकप्रिय होता जा रहा है। यह सिर्फ एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि प्यार, अपनापन और भावनाओं का सात दिन का सिलसिला है।

वैलेंटाइन वीक के सात दिन

7 फरवरी : रोज़ डे

प्यार की शुरुआत गुलाब से होती है — सम्मान और भावनाओं का प्रतीक।

8 फरवरी : प्रपोज डे

दिल की बात कहने का दिन — अपने जज़्बात खुलकर व्यक्त करने का मौका।

9 फरवरी : चॉकलेट डे

रिश्तों में मिठास घोलने का दिन।

10 फरवरी : टेडी डे

मासूमियत और अपनापन जताने का प्रतीक।

11 फरवरी : प्रॉमिस डे

एक-दूसरे से सच्चे वादे करने का दिन।

12 फरवरी : हग डे

गले लगकर भरोसा और सुकून देने का दिन।

13 फरवरी : किस डे

भावनाओं की गहराई जताने का दिन।

14 फरवरी : वैलेंटाइन डे

प्यार का सबसे खास दिन।

भारतीय संस्कृति और वैलेंटाइन वीक

भारतीय परंपरा में प्रेम सिर्फ प्रेमी-प्रेमिका तक सीमित नहीं रहा है। माता-पिता, गुरु, मित्र और समाज से प्रेम - यह हमारी संस्कृति की पहचान है। ऐसे में वैलेंटाइन वीक को सिर्फ रोमांस तक सीमित करना अधूरा नजरिया है। अगर इस सप्ताह में हम,

- *माता-पिता का सम्मान करें*
- *दोस्तों की मदद करें*
- *किसी जरूरतमंद को खुशी दें*

तो यह सप्ताह और भी अर्थपूर्ण बन सकता है।

पूर्वांचल प्रिंट्स की ओर से राजनाथ पाल द्वारा जीएमसीएच रोड, हरबाला मार्केट, भांगागढ़, गुवाहाटी-781005 से प्रकाशित एवं मुद्रित। संपर्क : 69001 26012
ई-मेल:official.janjanvichar@gmail.com, वेबसाइट : www.janjanvichar.in ●संपादक : धनेश्वर चौधरी